Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَیَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَاللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ○

(सूरत आले-इम्रान आयत :32)

अनुवाद: तू कह दे अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाले है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 9

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

22 जमादी सानी 1440 हिजरी कमरी 28 तब्लीग़ 1397 हिजरी शमसी 28 फरवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

जो आदमी अल्लाह तआला से प्यार करता है क्या वह एक जलने वाली ज़िन्दगी में रह सकता है।? जब इस स्थान पर एक हाकिम को दोस्त सांसारिक सम्बन्धों में एक प्रकार की जन्नत में ज़िन्दगी व्यतीत करता है क्यों न उन के लिए जन्नत का दरवाज़ा खुले जो अल्लाह के दोस्त हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुत्तकी के पास जो भी आता है वे बचाया जाता है

लोग बहुत सी मुसीबतों में गिरफ्तार होते हैं लेकिन मुत्तकी उस से बचाए जाते हैं बल्कि उन के पास जो जाता है वे भी बचाया जाता है। मुसीबतों की कोई सीमा नहीं। इन्सान का अपना अंदर इतनी मुसीबतों से भरा हुआ है कि उसका कोई अंदाज़ा नहीं है बीमारियों को ही देख लिया जाए कि हजारों बीमारियों को पैदा करने के लिए काफी हैं परन्तु जो तक्वा के किला में होता है वे इन से सुरक्षित होता है जो इस से बाहर होता है वह एक जंगल में है जो जानवरों से भरा हुआ है।

मुत्तकी को इसी दुनिया में बिशारतें मिलती हैं

मुत्तकी के लिए एक अन्य वादा भी है لَھُمُ الۡبُشۡرٰی فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا وَفِی الۡاٰخِرَۃِ (सूरत यूनस आयत 65) अर्थात जो मुत्तकी होते हैं उन को इसी दुनिया में बिशारतें सच्चे ख़वाबों के माध्यम से मिलती हैं। बल्कि इस से बढ़ के वह कशफ वाले हो जाते हैं। अल्लाह तआला से वार्तालाप अल्लाह तआला का सम्मान होता है। वे इन्सानी लिबास में ही फरिशतों को ही देख लेते हैं। फरमाया اِنَّ الَّذِیۡنَ قَالُوۡا رَبُّنَا اللّٰہُ ثُمَّ اسۡتَقَامُوۡا تَتَنَزَّلُ عَلَیۡہِمُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ (सूरत हाम मीम सिद्जा) अर्थात जो लोग कहते हैं कि हमारा रब्ब अल्लाह है और दृढ़ता दिखाते हैं अर्थात परीक्षाओं के समय इस तरह का व्यक्ति दिखला देता है कि जो मैंने मुंह से वादा किया था वह व्यावहारिक रूप से पूरा करता है।

परीक्षा ज़रूर आती हैं

परीक्षा ज़रूर आते हैं। जैसे यह आयत इशारा करती है اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ یُّتۡرَکُوۡۤا اَنۡ یَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَھُمۡ لَا یُفۡتَنُوۡنَ (अल्अन्कबूत 3) अल्लाह तआला फरमाता है कि जिन्होंने कहा कि हमारा रब्ब अल्लाह है और दृढ़ता की, उन पर फरिशते उतरते हैं। तफसीर करने वालों को ग़लती लगी कि फरिशतों का उतरना मृत्यु के समय में है। इस का अभिप्राय यह है कि जो लोग दिल को साफ करते हैं और गन्दगी तथा अपवित्रता से, जो अल्लाह से दूरी रखते है, इन में इल्हाम के लिए एक समानता पैदा हो जाती है। इल्हाम का सिलसिला शुरू हो जाता है फिर मुत्तकी की शान में एक स्थान पर फरमाता है: اَلَاۤ اِنَّ اَوۡلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَلَا ھُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ (यूनुस 63) अर्थात जो अल्लाह के वली हैं उन को कोई ग़म नहीं। जिन का ख़ुदा मददगार हो तो उस को कोई तकलीफ नहीं। कोई मुकाबला करने वाला नुकसान नहीं दे सकता अगर ख़ुदा तआला वली हो। फिर फरमाया وَاَبۡشِرُوۡا بِالۡجَنَّۃِ الَّتِیۡ کُنۡتُمۡ تُوۡعَدُوۡنَ (सिज्दा 31)अर्थात तुम उस जन्नत के लिए ख़ुश हो जाओ जिस का तुम को वादा है।

कुरआन करीम की शिक्षा से पाया जाता है कि इन्सान के लिए दो जन्नते हैं जो आदमी अल्लाह तआला से प्यार करता है क्या वह एक जलने वाली ज़िन्दगी में रह सकता है।? जब इस स्थान पर एक हाकिम को दोस्त सांसारिक सम्बन्धों में एक प्रकार की जन्नत में ज़िन्दगी व्यतीत करता है क्यों न उन के लिए जन्नत का दरवाज़ा खुले जो अल्लाह के दोस्त हैं, यद्यपि दुनिया तकलीफ तथा कष्टों का घर है परन्तु किसी को क्या ख़बर के वे किस प्रकार का आन्नद उठाते हैं। अगर उन को दुख हो तो आधा घन्टा भी कष्ट उठाना कठिन हो जाता है। हालांकि वे तो सारी उम्र में कष्ट में होते हैं। एक ज़माना की सल्तनत उन को देकर उन्हें अपने काम से रोक दिया जाए तो कब उस की सुनते हैं। इस तरह चाहे मुसीबत के पहाड़ टूट पड़े वे अपने इरादे नहीं छोड़ते।

आचरण का पूर्ण नमूना

हमारी पूर्ण हिदायत देने वाले को ये दोनों बातें थीं। एक समय तो तायफ में पत्थर बरसाए गए। एक बहुत जमाअत ने बहुत शारीरिक कष्ट दिए। परन्तु आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दृढ़ता में कोई अन्तर न आया। जब क़ौम ने देखा कि कष्टों तथा परेशानियों के उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तो उन्होनें जमा होकर बादशाहत का वादा किया। अपना अमीर बनाना चाहा। प्रत्येक तरह की सुविधाओं का सामान देने का वादा किया यहां तक कि सुन्दर से सुन्दर पत्नी भी। केवल शर्त यह थी कि आप बुतों को बुरा भला कहना छोड़ दें। परन्तु जैसा कि तायफ की मुसीबत के समय इसी तरह इस बादशाहत की मुसीबत के समय हज़रत ने कुछ परवाह न की और पत्थर खाने को प्राथमिकता दी। अत: जब तक विशेष आन्नद न हो तो क्या ज़रूरत थी कि आराम को छोड़ कर दु:खों में पड़े।

यह अवसर सिवाए हमारे प्रिय रसूल के और किसी अन्य को न मिला कि उन को नबुव्वत का काम छोड़ने का कोई वादा दिया गया हो। मसीह को भी यह बात प्राप्त न हुई दुनिया के इतिहास में केवल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ यह मामला हुआ। कि आप को हकूमत का वादा दिया गया अगर आप अपना काम छोड़ दें। अत: यह सम्मान हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही विशेष है। इसी तरह हमारे पूर्ण हादी को दोनों ज़माने कष्ट विजय के प्राप्त हुए ताकि दोनों समय में पूर्ण नमूना आचरण का दिखा सकें अल्लाह तआला ने मुत्तकियों के लिए चाहा है कि प्रत्येक प्रकार के सांसारिक आन्नद आराम अन्य रंग में हों। कई बार तकलीफ तथा कष्टों में। ताकि उन के दोनों आचरण पूर्ण नमूना दिखला सकें। कई आचरण ताकत में और कई कष्टों में खुलते हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ये दोनों बातें उपलब्ध थीं। अत: जितना हम आप के आचरण प्रस्तुत कर सकेंगे कोई अन्य क़ौम किसी नबी के आचरण प्रस्तुत नहीं कर सकेगी। जैसे मसीह का सब्र प्रकट करता है कि वह मार खाता रहा। परन्तु यह कहां से निकलेगा कि उन को ताकत मिली। वह नबी बेशक सच्चे हैं परन्तु उन के प्रत्येक तरह के आचरण प्रमाणित नहीं। चूंकि उन का वर्णन कुरआन में आ गया है इसलिए हम उन को नबी मानते हैं। अल्लाह की कसम इन्जील में तो उन का इस प्रकार को कोई आचरण तो प्रमाणित नहीं जैसे हिम्मत

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-5)

* जलसा सालाना जर्मनी कि अवसर पर जर्मन तथा अन्य लोगों से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

नई बैअत करने वाली औरतों तथा मर्दों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात तथा मुलाकात के बाद की भवानाएं

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

शेष ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अब तातारिस्तान जो रूस का एक राज्य है, इस के शहर कज़ान से 380 किलोमीटर दूर एक क़स्बा है एक अहमदी परिवार द्वारा वहां एक दोस्त एरिक साहिब को जमाअत का सन्देश मिला तो उन्होंने जमाअत का अध्ययन शुरू किया। फिर उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को उनके घर आने के लिए आमंत्रित किया जब हमारा प्रतिनिधिमंडल वहां पहुंचा तो उन्हें विस्तार से जमाअत का परिचय करवाया गया और उन्हें बैअत की शर्तों के बारे में भी बताया गया था। इस पर उन्होंने कहा, "मैं तो हर दिन दस बैअत की शर्तों का अध्ययन करता रहता हूं मैंने बैअत की शर्तें लकड़ी की छोटी तख्ती पर लिख कर घर के दरवाज़े पर लटकाई हुई है। अभी अहमदी नहीं हुए और बैअत की शर्तों को अपने घर के दरवाज़ा पर लटकाया हुआ है। और हर सुबह उठ कर मैं इन दस बैअत की शर्तों को पढ़ता हूं और ख़ुद से पूछता हूं कि कौन-कौन सी शर्तों का पालन नहीं कर रहा है। अभी बैअत करने से पहले यह हालत है तो महोदय नियमित बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए और उन्होंने मेरे नाम अपना एक पत्र भी लिखा कि मुझे तथाकथित मुसलमानों में रहकर उलमा की फैलाई हुई इस्लामी शिक्षा समझ नहीं आती थी और न ही इबादत की वास्तविकता और उद्देश्य समझ आता था यही समय था जब ये बातें मुझे गुमराही के गड्ढे में डूबो सकती थीं लेकिन अल्हम्दो लिल्लाह कि अल्लाह तआला ने मुझे गुमराह होने से बचा लिया और सही दिशा में मेरा मार्गदर्शन फरमाया। जमाअत के साहित्य में मैंने इस्लाम की सच्ची शिक्षा को बहुत अच्छे और आसान तरीके से समझा है और जमाअत का नारा मुहब्बत प्रत्येक से नफरत किसी से नहीं मुझे बहुत पसन्द आया। फिर बहुत सी कई घटनाएं इस तरह की होती हैं जहां ये सारी बातें तब्लीग़ का माध्यम बन जाती हैं।

फिर अमीर साहिब फ्रांस लिखते हैं कि पैम्फलेट के वितरण के दौरान एक मुस्लिम दोस्त ने जब हमारी पुस्तिकाओं को पढ़ा तो, उन्होंने कहा कि मैं आपके लिए लंबे समय तक इंतजार कर रहा था। इस्लाम का यह संदेश आज बहुत ज़रूरी है। मैं कुछ वर्षों से फ्रांस में रहा हूं और मेरा परिवार, जो आइवरी कोस्ट में स्थित है, नियमित रूप से आपके केंद्र में जा रही है और हम आपके समुदाय में बहुत रुचि रखते हैं। तब इन दोस्तों ने यूट्यूब पर जमाअत के फ्रांसीसी कार्यक्रम को देखना शुरू कर दिया और जमाअत के बारे में दो साल तक जानकारी प्राप्त करने के बाद, वे अंततः बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए तो वह आइवरी कोस्ट में रहते हैं। जमाअत वहां भी बहुत सक्रिय है। हर साल बैअतें भी होती हैं, लेकिन अगर अल्लाह तआला ने उन्हें मार्गदर्शन करने का सामान किया तो वह फ्रांस में आकर हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज ने फरमाया : "गैर-मुस्लिमों में भी इस्लाम की शिक्षाओं का प्रभाव होता है। अल्लाह तआला का नूर उन्हें उजागर करता है। इसलिए एक व्यक्ति की बैअत का ज़िक्र करते हुए बेनिन अलाडा क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि अलाडा शहर के उत्तर में ज़े क्षेत्र है जहां एक दोस्त ईसा साहिब को जमाअत के पमफलटस दिए गए। बाद में उन्होंने रेडियो भी सुनना शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि आप लोगों के पमफलटस पढ़कर मुझे तसल्ली हुई है और मैं जन्म से कैथोलिक हूँ, लेकिन मैं जब भी चर्च जाता था तो पादरी बाइबिल की जो कमेंटरी करते थे उनसे दिल को तसल्ली नहीं होती थी। लेकिन जब से अहमदी जमाअत की तब्लीग़ रेडियो पर सुनना शुरू कर दिया, तो आप लोग ने बाइबल की आयतों की जो तफसीर करते हैं वह सच्ची और दिमाग़ को छूती है। तो वह बैअत कर के अहमदिया जमाअत में शामिल हो गए।

फिर अल्लाह तआला अहमदियत स्वीकार करने के बाद किस ईमान में तरक्की देता है और ताकत देता है और तर्क भी सिखाता है इस का एक उदाहरण सिखाता है। तंजानिया मूनज़े क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि शियांगा क्षेत्र में जमाअत का गठन 2015 ई में हुआ था वहाँ पर्याप्त लोगों को इस्लाम अहमदियत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। इस जमाअत के एक सदस्य नौ मुबाईन जुमअः मसांजा साहिब यह छोटी मोटी चीजें बेचते हैं। यह नई बैअत करने वाले बताते हैं कि एक दिन में टंडे या टिंड जो कि अधिकांश ओमानी अरबों का क्षेत्र है वहाँ गया और बातों बातों में उन्हें बताया कि मैं अहमदी हो गया हूँ और अब हमारी मस्जिद भी है जहां हम नमाज़ अदा करते हैं । यह सुनते ही वह अरब आग बगूला हो गए और मुझे बुरा भला कहना शुरू कर दिया कि तुम मुसलमान नहीं हुए बल्कि बल्कि गुमराह हो गए हो तुम क़ादियानियत के पीछे चल कर। पहले तुम नास्तिक थे या ग़ैर मुस्लिम थे तो ज्यादा अच्छे थे तो वह कहने लगे कि वह जो अपने आप को अहमदी कहते हैं वह तो मुसलमान ही नहीं हैं बल्कि काफिर हैं। उन्होंने कहा, कहने लगे कि अगर तुम ने अपने आप को अहमदियों से अलग नहीं किया तो हमारे पास अपनी चीजें बेचने के लिए फिर न लाना। बड़ी परीक्षा थी आर्थिक रूप से गरीब लोग थे। यह दोस्त बताते हैं कि मेरे पास इतना ज्ञान तो नहीं था कि मैं उन्हें ज्ञान तर्क से समझा सकूँ लेकिन मैंने उनसे पूछा कि आप लोग कितने समय से यहां बसे हैं? ओमनी अरब ने कहा कि हम पिछले 80 सालों से यहां बसे हैं। इस पर मैंने कहा कि इन 80 वर्षों में आप लोगों ने इस धर्म को जिसे तुम सच्चा कहते हो इस्लाम को एक ऐसे गांव तक नहीं पहुंच सके जो तुम से केवल 15 किलोमीटर की दूरी पर है और अब अगर किसी ने हम तक अगर इस्लाम का संदेश पहुंचाया है, तो आप हमें बता रहे हैं कि तुम काफिर हो। तो अरबों ने जवाब दिया कि हमारा विचार थी कि तुम अभी इस्लाम स्वीकार नहीं कर पाओगे। यह अरबों के उन लोगों के गर्व की अवस्था है जो ख़ुद को एक महान विद्वान मानते हैं। अगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि इसी सिद्धांत पर चल रहे होते तो नऊज़ोबिल्लाह ये अरब जो बद्दू हैं वे तो कभी भी मुसलमान नहीं होते वे तो इसके लायक ही नहीं थे कि उन्हें मुसलमान किया जाता। आप ही थे जिन्होंने इस जंगल में रहने वालों को जानवरों की तरह रहने वालों को इन्सान बनाया फिर शिक्षित इन्सान बनाया फिर ख़ुदा वाला इन्सान बनाया और ये लोग कहते हैं कि आप अब इस योग्य नहीं हो जो मौजूदा दौर में रह रहे हैं कि तुम तक इस्लाम की तब्लीग़ की जानी चाहिए और फिर यह इस्लाम के ठेकेदार हैं। उसने उनसे कहा, यही कारण है कि तुम लोग इस योग्य हो जाओ, इसलिए हमने उस के बाद तब्लीग़ करेंगे। उस पर उस अहमदी ने कहा कि आप लोगों ने 80 साल इस बात का आकलन करने में लगा दिए कि ये लोग इस्लाम सीख सकते हैं या नहीं, जबकि जमाअत अहमदिया ने हमें इस योग्य समझा कि हम धर्म सीख सकते हैं और वह हमें मुसलमान बनाकर धर्म सिखा रहे हैं और वह हमें नास्तिकता से बचा रहे हैं। हम तो पीगन थे नास्तिक थे। अब अगर तुम चाहते हो कि मैं और मेरे सहयोगी जमाअत अहमदिया को छोड़ दें तो हमें भी 80 साल का समय दो ताकि हम आप लोगों के बारे में अनुमान लगा सकें कि आप सच्चे मुसलमान हो भी कि नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और के साथ अपने समर्थन के लाखों नमूने हमें हर साल दिखाता है फिर भी यह विरोधी कहते हैं कि तुम लोग मूर्ख हो उस व्यक्ति को छोड़ दो जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है। मूर्ख तो यह तथाकथित

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अवश्य अपने प्यारों के नामों को भी ज़िन्दा रखने के लिए उन के निकटवर्तियों के नाम उन के नाम पर रखते होंगे।

अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने के लिए प्रत्येक समय बेचैन रहने वाले, श्रद्धा तथा वफा की मुर्ति, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत तुफैल बिन हारिस, हज़रत सुलैम बिन उमरो अन्सारी, हज़रत सुलैम बिन हारिस अन्सारी, हज़रत सुलैम बिन मिलहान अन्सारी, हज़रत सुलैम बिन क़ैस अन्सारी, हज़रत साबित बिन सअलब:, हज़रत सिमाक बिन सअद, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिआब. हज़रत मुनज़िर बिन उमरो बिन ख़ुनैस, हज़रत मअबद बिन अब्बाद, हज़रत अदी बिन अस्सकन अन्सारी, हज़रत रबी बिन अयास, हज़रत उमैर बिन आमिर अन्सारी, हज़रत अबू सिनान बनि मुहसिन, हज़रत क़ैस बन अस्सकन अन्सारी. अबुल यसर कअब बिन अमरो रज़ि अल्लाहो अन्हुम व रज़ू अन्हो की मुबारक सीरत तथा ईमान वर्धक वर्णन।

ये लोग थे अदभुत शान थी, जिन्होंने हमें अल्लाह तआला से वफा के तरीके सिखाए। अल्लाह तआला से भय के तरीके सिखाए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों की दिल की गहराइयों से स्वीकारते हुए पूर्ण इताअत करने के तरीके भी सिखाए। अल्लाह तआला इन लोगों के स्तर ऊंचे करे।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 जनवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बद्री सहाबा का मैं वर्णन करूंगा उन में से पहला नाम हज़रत तुफैल बिन हरिस का है। हज़रत तुफैल बिन हारिस का संबंध कुरैश से था और आप की माता का नाम सुख़ैला बिन्त ख़ुराई था। मदीना हिजरत के बाद हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तुफैल बिन हारिस और हज़रत मुन्ज़िर बिन मुहम्मद के साथ या कुछ अन्य रिवायतों के अनुसार हज़रत सुफियान बिन नसर से आपका भाईचारा स्थापित किया था। हज़रत तुफैल बिन नसर अपने भाई हज़रत उबैद और हुसैन के साथ जंग बगर में सम्मिलित हुए थे। इसी तरह आपने जंगे उहद और जंगे खंदक सहित समस्त जंगों में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। उनकी वफात 32 हिजरी में 70 वर्ष की आयु में हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 74, तुफैल बिन हारिस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 38, तुफैल बिन हारिस प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

दूसरे सहाबी हैं हज़रत सुलैम बिन अमरो अन्सारी। उनकी माता का नाम उम्मे सलीम बिन्त अमरो था और आपका संबंध खज़रत का ख़ानदान बनू सलीम से थे और कुछ रिवायतों में आपका नाम सुलैमान बिन अमरो था उन्होंने उक्बा में सत्तर 0 आदमियों के साथ बैअत की और जंग-ए-बदर शामिल हुए और जंग उहद में सम्मिलित हुए और आपके साथ आपके गुलाम उशैर भी थे।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 2 पृष्ठ 545 सुलैम बिन अमरो प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2003)(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 435, सुलैम बिन अमरो प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का वर्णन है उन का नाम हज़रत सुलैम बिन अन्सारी है। उन का सम्बन्ध भी कबीला ख़ज़रज के खानदान बनू दीनार से था यह भी कहा जाता है कि आप ख़ानदान बनू दीनार के ग़ुलाम थे। और यह भी कहा जाता है कि आप हज़रत जह्हाक बिन हारिस के भाई है। बहरहाल जो बातें आप के बारे में पता हैं ये दोनों बातें हैं। और जंग उहद में शहादत का स्तर पाया।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 2 पृष्ठ 543 सुलैम बिन हारिस प्रकाशक दारुल क़ुतुब अल्इमिया बैरूत 2003 ई)

फिर हज़रत सुलैमान निब मिलहान अन्सारी हैं। उन की माता मुलैकिह बिन्त मालिक थी। हज़रत अनस बिन्त मालिक के मामू जब कि हज़रत उम्मे हराम और हज़रत उम्मे सलीम के भाई थे। हज़रत उम्मे हराम हज़रत उबादह बिना सामित की बीवी थीं। जब कि हज़रत उम्मे सलीम अबी तलहा अन्सारी की पत्नी थीं और उन के बेटे हज़रत अनस बिन मलिक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ादिम थे। वह जंग बदर और जंग उहद में अपने भाई हज़रत हराम बिन मिलहान के साथ शामिल हुए। औरर आप दोनों ही बैअरे मऊना की घटना में शहीद हुए।

(असदुल ग़ाब: जिल्द 2 पृष्ठ 546 सुलैम बिन मिलहान प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2003) (अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 391, सुलैम बिन मिलहान प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 1990 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत के छत्तीसवें साल सफर के महीने में बैअरे मऊना की तरफ से हज़रत मुन्ज़िर बिन अमरो अस्साअदी की टुकड़ी निकली। आमिर बिन जअफर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप को तोहफा देना चाहा। जिसे आप ने लेने से इन्कार कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस इस्लाम की दावत दी। उस ने उस स्वीकार न किया और न ही इस्लाम से दूर हुआ। आमिर ने निवेदन किया कि अगर आप अपने साथियों में से कुछ आदमी मेरे साथ मेरी क़ौम की तरफ भेज दें तो मुझे आशा है कि वे आप की दावत स्वीकर कर लेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे डर हैं नजद वाले उन को किसी प्रकार के कष्ट न पहुंचाएं। तो उस ने कहा कि अगर कोई उन के सामने आया तो मैं उन को पनाह दूंगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सत्तर नौजवान जो कुरआन की क़ारी कहलाते थे उस के साथ भिजवा दिए और हज़रत मुन्ज़िर बिन अस्सअदी को उन पर अमीर निर्धारित कर दिया। पहले भी यह घटना वर्णन कर चुका हूं। जब यह लोग बैअरे मऊना के स्थान पर पहुंचे जो बनू सलीं का घाट था। और बनी अमिर तथा बनू सलीम की ज़मीन के मध्य में था ये लोग वहीं उतरे पड़ाव किया और अपने ऊंट वहीं छोड़ दिए उन्होंने पहले हज़रत हराम बिन मिलहान को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम देकर आमिर बिन तुफैल के पास भेजा उस ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सन्देश पढ़ा ही नहीं और हज़रत हराम

बिन मिलहान पर हमला कर के उन को शहीद कर दिया। उस के बाद मुसलमानों के विरुद्ध उस ने आमिर को बुलाया मगर उन्होंने उस की बात मानने से इन्कार कर दिया। फिर उस ने कबीले सुलैम बिन उसय्या और ज़कवान और रिअल को पुकारा। वे लोग उस के साथ रवाना हो गए और उसे अपना रईस मान लिया। जब हज़रत हराम के आने में देर हुई तो मुसलमान उन के पीछे गए। कुछ दूर जाकर उन का सामना उस जत्थे से हुआ जो हमला करने के लिए आ रहा था। दुश्मन संख्या में अधिक थे। जंग हुई और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा शहीद कर दिए गए। मुसलमानों में हज़रत सुलैम बिन मिलहान और हकम बिन कीसान को जब घेर लिया गया तो उन्होंने कहा कि हे अल्लाह सिवाए तेरे कोई इस तरह का नहीं मिलता जो हमारा सलाम तेरे रसूल को पहुंचा दे। अत: तू ही हमारा सलाम पहुंचा दे। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने इस की ख़बर दी तो आप ने फरमाया व अलैहेमुस्सलाम उन पर सलामती हो। मुन्ज़िर बिन अमरो ने उन लोगों ने कहा कि अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें पनाह दे देंगे परन्तु उन्होंने इन्कार किया। वह हज़रत हराम की शहादत के स्थान पर आए। उन लोगों ने जंग की यहां तक कि शहीद हो गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वे आगे बढ़ गए ताकि मर जाऐं। अर्थात मौत के सामन चले गए हालांकि वे इसे जानते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 39-40, सिरया अल्मुन्ज़िर बिन अमरो प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) बावजूद जंग का सामान पूरा न होने के बहुत बहादुरी से दुश्मन का मुकाबला किया और जंग की निय्यत से गए भी नहीं थे।

फिर वर्णन है हज़रत सुलैम बिन कैस अन्सारी का। उन की माता का नाम उम्मे सुलैम बिन्त ख़ालिद था। जो हज़रत ख़ुला बिन्त क़ैस के भाई थे जो हज़रत हमज़ा की पत्नी थीं। आप ने जंग बदर तथा जंग उहद में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। आप की वफात हज़रत उस्मान के ज़माना में हुई। (असदुल -ग़ाबा, खंड 2, पृष्ठ 545-546 सुलैम बिन क़ैस अन्सारी प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 372 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत साबित बिन सअलब: हैं। उन का नाम हज़रत साबित बिन सअलब: था। और उन की माता का नाम उम्मे अनास बिन्त सअद था जिन का सम्बन्ध कबीला बनू उज़रह से था। आप के पिता सअलब: बिन ज़ैद को अल्जिज़आ कहा जाता थे। उन का यह नाम उन की बहादुरी तथा मज़बूत इरादा के कारण से मिला था। इसी कारण से हज़रत साबित को इब्नुल जिज़आ कहा जाता है। हज़रत साबित बिन सअलब: की औलाद में से अब्दुल्लाह तथा हारिस शामिल हैं। उन सब की माता उमामा बिन्त उसमान थीं। हज़रत साबित सत्तर अन्सार सहाबा के साथ बैअत उक्बा सानिया में शामिल हुए। जंग दर जंग उहद जंग ख़ंदक और सुलह हुदैबिया और फत्ह मक्का तथा जंग ताइफ में भी शामिल हुए थे। आप ने जंग ताइफ के दिन ही शहादत प्राप्त की।

(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 428-429 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत सिमाक बिन सअद हैं। आपके पिता सअद बिन सअलब: थे। आप हज़रत नुअमान बिन बशीर के पिता हज़रत बशीर बिन सअद के भाई थे। बदर में अपने भाई बशीर के साथ शामिल हुए। और उहद में भी शरीक हुए थे। उन का सम्बन्ध कबीला ख़ज़रज से था।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 2, पृष्ठ 552 सिमाक बिन सअद प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिआब है। हज़रत जाबिर की गिन्ती उन छ: अन्सार में की जाती है जो सब से पहले मक्का में ईमान लाए। हज़रत जाबिर बद्र और उहद और खंदक तथा सारी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 3, पृष्ठ 431 जाबिर बिन अब्दुल्लाह प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

बैअत ऊला उक्बा से पहले अन्सार के कुछ लोगों की आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाकात हुई जिन की संख्या छ: थी। वे छ: लोग ये थे। असद बिन ज़ुरारह:, राफे बिन मालिक उजलान, कत्बा बिन आमिर बिन हदीद: उक्बा बिन आमिर नाबी और जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिआब। ये सब लोग मुसलमान हो गए। जब ये लोग मदीना आए तो उन्होंने मदीना वालों से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िक्र किया।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 1, पृष्ठ 492 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

इस का विस्तार से वर्णन पहले उक्बा बिन आमिर के ज़िक्र में आ चुका है। यहां संक्षेप में मैं वर्णन करूंगा। ये लोग जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विदा हुए और जाते हुए निवेदन किया कि हमें आपस की लड़ाईयों ने बहुत कमज़ोर कर दिया है हम में आपस में बहुत मतभेद हैं। हम यसरब में जाकर अपने भाइयों को इस्लाम की दावत देंगे। क्या आश्चर्य है कि अल्लाह तआला आप के माध्यम से हमें फिर एक हाथ में जमा कर दे। फिर हम हर तरह से आप की सहायता के लिए तैय्यार हैं। अत: ये लोग गए और इन के कारण से यसरब में इस्लाम का चर्चा होने लगा। यह साल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों की तरफ से ज़ाहरी अवस्था को देखते हुए आशा निराशा के मध्य में व्यतीत किया। आप प्राय: यह विचार करते थे कि देखें इन का अन्जाम क्या होता है और आया यसरब में सफलता की कोई आशा बंधती है या नहीं। मुसलमानों के लिए भी यह ज़माना ज़ाहरी हालात की दृष्टि से एक आशा निराशा का ज़माना था। कभी उम्मीद की किरण होती थी कभी निराशा होती थी। वे देखते थे कि मक्का के सरदार और तायफ के आमीरों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिश्न को कठोरता से रद्द कर दिया था। अन्य कबीले भी एक एक कर के इन्कार पर मुहर लगा चुके थे। मदीना में आशा कि एक किरण पैदा हुई थी मगर कौन कह सकता था कि मुसीबतों तथा कष्टों के मध्य में आंधियों में स्थापित रह सकेगी।

बहरहाल ये गए और उन्होंने तब्लीग़ की परन्तु इस दौरान मक्का वालों की तरफ से भी दुश्मनी या विरोध प्रतिदिन बढ़ रहा था और वे लोग इस बात पर विश्वास रखते थे कि इस्लाम को मिटाने का अब यही समय है क्योंकि अगर मक्का से बाहर निकलना शुरू हो गया और फैलना शुरू हो गया तो फिर इस्लाम को मिटाना मुश्किल होगा। इसलिए मक्का वालों ने भी विरोध अपने पूरे ज़ोरों पर कर दिया था परंतु इसके बावजूद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके श्रद्धावान सहाबी जो थे जिन्होंने बैअत की थी, मुसलमान हुए थे एक मज़बूत चट्टान की तरह अपनी बात पर कायम थे। कोई बात उनको इस्लाम की शिक्षा से और इस्लाम से हटा नहीं सकती थी। तौहीद से हटा नहीं सकती थी। बहरहाल इस्लाम के लिए एक बहुत नाज़ुक समय था, और आशा भी थी और भय भी था कि मदीना में ये लोग हैं तो देखें कि इन के क्या परिणाम होते हैं।

फिर अगले साल मदीना से एक वफद हज के अवसर पर आया तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बड़े शौक के साथ अपने घर से निकले और मिना के निकट उक्बा के पास पहुंच कर इधर उधर नज़र दौड़ाई तो अचानक आप की नज़र यसरब की एक छोटी सी जमाअत पर पड़ी। जिन्होंने आप को देख कर शीघ्र ही पहचान लिया और बहुत मुहब्बत तथा श्रद्धा से आगे बढ़े और आप को मिले। उन में से पांच तो वही थे जो पहले बैअत कर के गए थे। और सात नए थे और ये लोग औस तथा खज़रज दोनों कबीला से थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अवसर पर लोगों से अलग होकर एक घाटी में एक वादी में उन को एक तरफ ले गए और वहां तो बारह आदमी का वफद आया था उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यसरब के हालात के बारे में बताया और उन सब ने नियमित आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की। और यही बैअत थी जो यसरब में इस्लाम की बुनियादी नींव का पत्थर था।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन शब्दों में बैअत ली वह ये थे हम ख़ुदा को एक मानेंगे। शिर्क नहीं करेंगे। चोरी नहीं करेंगे। ज़ना नहीं करेंगे। कत्ल से रुकेंगे। किसी पर आरोप नहीं लगाएंगे। और प्रत्येक नेक काम में आप की आज्ञापालन करेंगे। बैअत के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "अगर तुम सच्चाई के साथ इस वादा पर स्थिरता दिखाओ तो तुम्हें जन्नत नसीब होगी और अगर कमज़ोरी दिखाए तो फिर तुम्हारा मामला अल्लाह तआला के साथ है, वह जिस तरह चाहेगा करेगा।"

(उद्धरित सीरत ख़त्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 222-224)

बहरहाल फिर उन लोगों ने अपने बैअत के वादा को प्रमाणित कर के दिखाया। न केवल साबित कर के दिखाया बल्कि उच्च स्तर तक पहुंचाया और फिर हम बाद के हालात देखते हैं कि किस तरह मदीना में इस्लाम पहुंचा।

हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्रो ख़नैस एक सहाबी का वर्णन करूंगा। उन का उपनाम मुअनिक ने मौत या मुअनिक लिल्मौत अर्थात आगे बढ़ कर मौत को गले लगाने वाला। उन का नाम मुन्ज़िर तथा पिता का नाम अम्रो था। अन्सार के कबीला खज़रज की शाखा बनू साअदह से थे। बैअत उक्बा में शामिल हुए थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्रो को और हज़रत साअद बिन उबादह को उन के कबीला बनू साअद का नकीब निर्धारित किया था। अर्थात सरदार निर्धारित किया था या निगरान निर्धारित किया था। जाहलियत के ज़माना में भी हज़रत मुन्ज़िर पढ़ना लिखना जानते थे। हिजरत मदीना के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुन्ज़िर को हज़रत तुलैब बिन उमैर के साथ भाईचारा स्थापित किया था। हज़रत मुन्ज़िर जंग बदर में और जंग उहद में शामिल हुए थे।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 5, पृष्ठ 258 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत मुन्ज़िर के बार में सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए ने लिखा है " कबीला ख़ज़रत के खानदान बनू साअदह से थे और एक सूफ़ी मिज़ाज के आदमी थे। बैअरे मऊना में शहीद हुए।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 232)

बैउरे मऊना का वर्णन पहले सहाबा के संदर्भ में पहले ही उल्लेख किया जा चुका है। कुछ भाग हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्रो के सन्दर्भ में यहाँ सार के रूप में उल्लेख कर देता हूं जो सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में है।

सलीम और ग़तफ़ान कबीले अरब के मध्य में बसे हुए थे और मुसलमानों के खिलाफ मक्का के कुरैश के साथ मेल जोल रखते थे। आपस में उन का मक्का के कुरैश के साथ जोड़ था कि किस तरह इस्लाम को खत्म किया जाए और धीरे-धीरे इन बुरे कबीलों की शरारतें बढ़ती जाती थीं। और सारा नजद इस्लाम के ज़हरीले प्रभाव के अधीन आता जा रहा था। जिसका असर हो रहा था। इसलिए इस दिनों में, एक व्यक्ति अबू अमिर जो मध्य अरब के कबीला बनू अमिर का एक धनवान था आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में मुलाकात के लिए हाज़िर हुआ। उस ने बहुत ध्यान से तब्लीग़ सुनी परन्तु मुसलमान नहीं हुआ। फिर जिस तरह के वर्णन हो चुका है कि उस ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मेरे साथ कुछ आदमी नजद की तरफ तब्लीग़ के लिए भेजें जो वहां जाकर नजद वालों में इस्लाम की तब्लीग़ करें। और साथ ही यह कहने लगा कि मुझे आशा है कि नजद के लोग आप की दावत को रद्द नहीं करेंगे। परन्तु आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझे तो नजद वालों पर भरोसा नहीं अबू बराअ कहने लगा कि आप हरगिज़ फिक्र न करें। जो लोग मेरे साथ जाऐंगे में उन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेता हूं चूंकि अबू बराअ एक कबीले का रईस और प्रभाव वाला आदमी था आप ने उस के संतुष्टि देने पर विश्वास कर लिया और सहाबी की एक जमाअत नजद की तरफ रवाना कर दी।

हज़रत मियाँ बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि यह इतिहास की रिावयत है, लेकिन बुखारी की रिवायत में आता है कि कबीला रिअल और ज़कवान इत्यादि जो प्रसिद्ध कबीला बनू सलीम की शाखाएँ थीं, उनमें से कुछ लोग आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और इस्लाम को प्रकट कर के निवेदन किया कि हमारी कौम में जो लोग इस्लाम के दुश्मन हैं उन के विरुद्ध हमारी सहायता की जाए। यह व्याख्या नहीं की गई थी कि किस तरह की सहायता है क्या फौजी हैं या तब्लीग़ करने वाले हैं। बहरहला उन्होंने अनुरोध किया कि कुछ लोगों को इसके लिए भेजे जाएं जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दस्ता रवाना फरमाया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि दुर्भाग्य से, बुखारी की परंपरा में तथा बेअर मऊना की रिवायत में कुछ बातें आपस में लिम गई हैं। दो घटनाओं की आपस में कुछ रिवायतें मिल गई हैं। इसलिए, तारीख़ से और बुखारी की परंपरा से, यह सहीह पता नहीं लगता कि वास्तव में सच्चाई क्या है? जिस के कारण वास्तविकता पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाती? लेकिन बहरहाल उन्होंने इस का भी हल निकाला है बहरहाल यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि इस अवसर पर कबीला रियाल और ज़कवान आदि के लोग भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में मौजूद थे और उन्होंने यह अनुरोध किया था कि कुछ सहाबी उन के साथ भेज दिए जाएं। आपने यह लिखा है कि यदि दो रिवायतें अलग हैं और यदि इन की एक दूसरे के साथ सम्पर्क वर्णन करना है तो या इन में बराबरी की जा सकती है, तो वह कहते हैं कि यह इन दोनों रिवायतों में अनुकूल की यह अवस्था हो सकती है रिअल और ज़कवान के लोगों के साथ कबीला आमिर का रईस अबू आमरी भी आया हो। उस ने उन की तरफ से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कसे बात की हो। अत: इस प्रकार, ऐतिहासिक रिवायत के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फरमाना कि मुझे नजद वालों की तरफ से संतोष नहीं है है और फिर उस का यह जवाब देना कि आप चिंता न करें। मैं इन की ज़िम्मेदारी लेता हूं कि आपके सहाबा को कोई परेशानी नहीं होगी। इस बात की तरफ संकेत करता है कि अबू बराअ के साथ रिअल और जकवान के लोग भी आए थे, जिसके कारण से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चिंतित थे।

बहरहाल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफर 4 हिजरी में मुन्ज़िर बिन अम्रो अंसारी की इमारत में सहाबा की एक जमाअत रवाना फरमाई। ये लोग आमतौर पर अंसार में से थे, संख्या सत्तर थी। अधिकांश क़ारी और कुरआन पढ़ने वाले थे। जब यह लोग उस स्थान पर पहुंचे जो एक कुएँ के कारण बेयर मऊना के नाम से मशहूर था तो उनमें से एक व्यक्ति हराम बन मिलहान जो अनस बिन मालिक के मामा थे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से इस्लाम का पैग़ाम लेकर कबीला आमिर के अमीर अबू बराअ अमरी जिस का पहले वर्णन हो चुका है के भतीजे अमरो बिन तुफ़ैल के पास गए और बाकी सहाबी पीछे रहे। जब हराम बन मिलहान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत के रूप में आमिर बन तुफ़ैल और उसके साथियों के पास पहुंचे तो उन्होंने शुरू में तो पाखंड के रूप में आवभगत की लेकिन फिर जब वह संतुष्ट होकर बैठ गए और इस्लाम का प्रचार करने लगे जैसा कि उल्लेख किया गया है, कुछ दुष्ट लोगों ने एक आदमी की ओर इशारा किया और उसने पीछे से हमला कर के उन को भाला मार कर शहीद कर दिया। उस समय हराम इब्न मलहान की ज़बान से यह शब्द निकले अल्लाह अकबर फुज़तो व रब्बुल कअब अर्थात अल्लाह अकबर काबा के रब्ब की कसम मैं तो सफल हो गया। अम्रो बिन तुफ़ैल ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूत की हत्या पर ही संतोष नहीं की बल्कि उसके बाद अपने कबीले बनो आमिर लोगों को उकसाया कि वे मुसलमानों की शेष जमाअत पर हमलावर हो जाएं।

लेकिन उन्होंने उल्लेख हुआ उसका इन्कार लेकिन यहाँ और क्या है। उन्होंने कहा कि अबू बक्र की जिम्मेदारी होते हुए हम मुसलमानों पर हमला नहीं करेंगे। क्योंकि अबू बक्र ने अल्लाह तआला से दुआएं मांगीं (अल्लाह तआला की दुआएं उस पर हों) कि मैं उनका हक़दार हूं। तो इस जनजाति ने कहा कि हम गारंटी देने पर हमला नहीं करेंगे। परन्तु जो अधिक बात है और वह यहां हुई है उन्होंने यह कहा कि हम अबी बराअ की ज़िम्मेदारी के होते हुए मुसलमानों पर हमला नहीं करेंगे क्योंकि अबू आमिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया था कि मैं ज़िम्मेदार हूं तो इस कबीले ने कहा कि जब यह ज़िम्मेदार हो गया तो हम हमला नहीं करेंगे।

इस पर आमिर बिन सुलैम ने बनू रिअल और ज़कवान और उसय्या इत्यादि को जो दूसरा कबीला था और जो बुख़ारी की रिवायत के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वफद बल कर आए थे अपने साथ लिया और ये सब लोग मुसलमानों की थोड़ी सी जमाअत पर हमला करने लगे। मुसलमानों ने जब इन वहशी दरिन्दों को अपनी तरफ आते हुए देख तो उन से कहा कि हमें तुम से कोई बात नहीं है। हम लड़ने तो नहीं आए हम तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से एक काम के लिए आए हैं। और तुम से बिल्कुल लड़ने का इरादा नहीं है परन्तु उन्होंने एक न सुनी और सब को शहीद कर दिया।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 517 से 519)

इतिहास में आता है कि जब जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने बेअर मऊना के शहीदों के बारे में ख़बर दी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुन्ज़िर बिन अम्रो के बारे में फरमाया जिन सहाबी की बात हो रही है कि अनक लेमौत अर्थात हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्रो ने यह जानते हुए कि अब शहादत ही भाग्य में है अपने साथियों की तरह इसी जगह लड़ते हुए शहादत को स्वीकार कर लिया इसलिए आप आप अनक नेमौत या अनक लिल्मौत के उपनाम से प्रसिद्ध हो गए।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 5, पृष्ठ 258 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 2 पृष्ठ 40 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) हज़रत मुन्ज़िर बिन अम्रो से उन लोगों ने कहा था कि अगर आप

चाहें तो तुम शान्ति दे दी जाए परन्तु हज़रत मुन्ज़िर ने उन लोगों की अमान लेने से मना कर दिया।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 5, पृष्ठ 258-259 सुलैम बिन क़ैस अन्सारी प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत सहल वर्णन करते हैं कि जब हज़रत अबू उसैद के यहां उन के बेटे मुन्ज़िर बिन अबी उसैद पैदा हुए तो उन्हें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में लाया गया। इस अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय बच्चे को अपनी रान पर बिठा लिया। उस समय हज़रत अबू उसैद बैठे हुए थे। इतने में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी काम में मशगूल हो गए। हज़रत अबू उसैद ने संकेत दिया कि लोग मुन्ज़िर को आपकी जांघों पर से उठा कर ले गए। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काम से फ़ारिग़ हुए तो पूछा कि बच्चा कहां गया। ? हज़रत अबू उसैद ने वर्णन किया कि हे अल्लाह के रसूल हम ने उसे घर भेज दिया है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसका नाम क्या रखा है? अबू उसैद ने कहा कि अमुक नाम रखा हैं। आपने कहा नहीं उसका नाम मुन्ज़िर है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस दिन उस बच्चे के नाम का नाम मुन्ज़िर रखा। यह वह मुन्ज़िर नहीं जिसका वर्णन हो रहा है। शारहीन ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस बच्चे का नाम अल मुन्ज़िर रखने के कारण यह बयान किया है कि हज़रत अबू उसैद के चाचा का नाम अल मुन्ज़िर बिन अम्रो था, वही सहाबी जिनका ज़िक्र हुआ जो बेयर मऊना में शहीद हुए। अबू उसैद के चाचा का नाम मुन्ज़िर इब्न अम्रो था। यह अबू उसैद के चाचा थे, जो बेअर मऊना में शहीद हुए थे। अत: यह नाम तफाउल के कारण रखा गया था कि यह भी उनके अच्छे उत्तराधिकारी साबित हों। (सहीह अल्बख़ारी किताबुल अदब अध्याय तहवीलुल इस्म अहसन मिन्हो हदीस 6191) (फत्हुल बारी व्याख्या सही अलबख़ारी किताबुल मगाज़ी जिल्द 7 पृष्ठ 452 मुद्रित दारु अर्रियान काहिरा 1986 ई) यह भी कारण होगा लेकिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने करीबियों का नाम ज़िन्दा रखने के लिए भी इन के करीबियों के नाम उनके नाम पर रखते होंगे।

हज़रत मअबद इब्न अब्बाद एक सहाबी था, जिन का अप नाम अबू हुमैसा था। पिता की नाम अब्बाद बिन क़ुशैर। हज़रत मअबद बिन अब्बाद का नाम मअबद बिन उबादह और मअबद बिन उम्मारा वर्णन किया गया है। उन का सम्बन्ध कबीला ख़ज़रज की शाखा बनू सालम बिन बनू ग़नम बिन औफ से था। उन का उपनाम अबू हुमैसा था। कुछ के निकट उन का उपनाम अबू ख़ुमैसा था और अबू उसैमा भी वर्णन किया गया है जंग बदर तथा जंग उहद में शामिल हुए थे।

(असदुल -ग़ाबा, खंड 5, पृष्ठ 211-212 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हैं अदी बनि अब्बा अन्सारी। इन का नाम सिनान बिन सुबीअ था। आप ने हज़रत अमर के ख़िलाफत के ज़माना में वफात पाई। हज़रत अदी के पिता अबी ज़ग़बा का नाम सिनान बिन सुबीअ बिन सअलब: था। आप का सम्बन्ध अन्सार के कबीला जुहैन: से था। जंग बदर तथा जंग उहद सहित सारी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए थे

(असदुल -ग़ाबा, खंड 4, पृष्ठ 11 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 377 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को हज़रत बसबस बिन अमरो के साथ मालूमात लाने के लिए जंग बदर के अवसर पर अबू सुफयान के काफिला की तरफ भेजा था। यह ख़बर लेने गए यहां तक कि समुद्र के तट तक पहुँच गए। हज़रत बसबस बिन अम्रो और हज़रत आदि बिन अबी ज़गबाय ने बदर के स्थान पर एक टीले के पास अपने ऊंट बिठाए जो एक घाट के पास था। फिर उन्होंने अपनी मश्कें लीं और घाट पर पानी लेने के लिए आए। एक व्यक्ति मुजदी बिन अम्रो जुहनी घाट के पास खड़ा था। उन दोनों साथियों ने दो महिलाओं से सुना कि एक महिला ने दूसरी को बताया कि कल या परसों काफला आएगा तो मैं उस की मज़दूरी कर के तेरा कर्ज़ उतार दूंगी अब ये बातें दो महिलाएं कर रही हैं, लेकिन इस में जानकारी थी। मजदी ने कहा कि ठीक कहती है। फिर वह इन दो महिलाओं के पास चला गया वहाँ से हट कर चला गया। हज़रत अदी और हज़रत बसबस ने ये बातें सुनीं। ये दोनों जब गए तो उन दोनों ने महिलाओं की ये बातें सुन ली थीं उन्होंने आ कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी। (किताबुल मग़ाज़ी जिल्द1 पृष्ठ 40 अध्याय बद्र कताल मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1984 ई) अर्थात कि यह बात हम ने सुनी कि दो महिलाएँ कह रही थीं कि एक काफला आएगा और यह कुफ्फार के क़ाफ़ला की ख़बर थी तो इस तरह ये लोग जानकारी पहुँचाया करते थे। देखने में दो महिलाएं केवल बातें कर रही हैं, लेकिन उन्होंने इसके महत्व का अनुमान नहीं लगाया और यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण ख़बर थी, क़ाफिला के आगमन की सूचना मिल रही थी। हज़रत अदी बिन अबी रग़बा ने हज़रत अमर के ख़िलाफत के दौर में वफात पाई।

(असाब: जिल्द 4 पृष्ठ 391-392 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत रबी बिन आयस हैं। वह अंसार के कबीला ख़ज़रज की शाखा बानो लुजान से थे। जंग बद्र में अपने भाई वरकह बिन इयास और अम्रो बिन इयास के साथ शामिल हुए और जंग उहद में भी शामिल हुए। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 416-417 दारुल कुतुब बैरूत 1990 ई) (किताबुल मग़ाज़ी जिल्द 1 पृष्ठ 167 आलमुल कुतुब बैरूत 1984 ई)

फिर एक सहाबी हैं जिनका नाम हज़रत उमैर बिन आमिर अंसारी है। उनका उपनाम अबू दाऊद था और उनके पिता आमिर इब्न मलिक थे। आपकी माँ का नाम नाइला बिन अबी आसिम था। हज़रत उमैर का सम्बन्ध अंसार के कबीला खज़रज से था। हज़रत उमैर अपने उपनाम अबू दाऊद से ज्यादा मशहूर हैं। जंग बदर तथा जंग उहद में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 393 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (असाबह जिल्द 4 पृष्ठ 598 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत उम्मे अमारा बयान करती हैं कि हज़रत अबु दाऊद मज़नी अर्थात हज़रत उमैर और हज़रत सुलैत बिन अमर दोनों बैअत अक़्बा में उपस्थित होने के लिए निकले तो उन्हें पता चला कि लोग बैअत कर चुके हैं। इस पर उन्होंने बाद में हज़रत उसैद बिन ज़ुरैरह के माध्यम से बैअत की जो अक़्बा रात नुकबाय से थे। (असाबह जिल्द 7 पृष्ठ 99 अबू दाऊद अंसार अलमाज़नी मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995) एक नकीब निर्धारित किए गए थे। सरदार नियुक्त किए गए थे। उन के माध्यम से उन्होंने बैअत की। एक रिवायत के अनुसार जंग बदर में अबुल बख़्तरी को कत्ल करने वाले हज़रत अमीर इब्न आमिर थे

(असदुल-ग़बाह, खंड 6, पृष्ठ 9 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

फिर एक सहाबी हैं। हज़रत सअद मौला हज़रत हातिब इब्न अबी बलतअ। इन का सम्बन्ध बनू कलब के कबीला से थे। हज़रत सअद बिन ख़ौला हज़रत हातिब बिन अबी बलता के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे। हज़रत साद बिन ख़ौला का सम्बन्ध जनजाति बानो क्लब से है, लेकिन अबू मशअर के निकट वह कबीला बनू मज़दह से थे। कुछ लोगों का विचार है कि आप फारस वालों में से थे। हज़रत साद बिन ख़ौली, हज़रत हातिब इब्न अबी बलता के पास ग़ुलाम होकर पहुँचे। हजरत हातिब इब्न अबी बलता आप के साथ बहुत रहम और दया के साथ व्यवहार करते थे। हज़रत साद हज़रत हातिब बिन अबी बलतह के साथ जंग बद्र और जंग उहद में शरीक हुए और जंग उहद में आप शहीद हुए। हजरत उमर ने हज़रत सअद के बेटे अब्दुल्लाह इब्न सअद का अंसार के साथ छात्रवृत्ति तय की।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 428 मुद्रित उत्तरदायी दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003ई) (अत्तबकातु कुबरा जिल्द 3 पेज 85 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (सैरुस्सहाब: जिल्द 4 भाग 7 पृष्ठ 318 हज़रत साद बिन ख़ौला मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

फिर एक साथी हैं अबू सिनान बिन मुहसिन। उनके पिता मुहसिन बिन हुर्रा थे। उनका उपनाम अबू सनान था। उनका नाम वहब बिन अब्दुल्लाह था और अब्दुल्लाह इब्न वहब भी वर्णन किया गया है और उपनाम था अबू सनान। जबकि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

“अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।”

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्किम)

सही दृष्टिकोण के अनुसार जो इतिहास में मिलता है आप का नाम वहब बिन मुहसिन था। अबू सिनान बिन मुहसिन हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन के भाई था। (असदुल -ग़ाबा, खंड 6, पृष्ठ 153 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003) आप हज़रत उक्काशा बिन मिहसन के बड़े भाई थे। इसके बारे में भी यह रिवायत है कि हज़रत उक्काशा से लगभग दो साल बड़े थे और विभिन्न रिवायतें भी हैं। कुछ ने दस साल कहा। कुछ ने बीस साल कहा। (असदुल गाबह जिल्द 6 पृष्ठ 153 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003) (अरौंज़ल अनफ जिल्द 4 पृष्ठ 62 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 69 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) उनके बेटे का नाम सिनान बिन अबू सिनाना था। जंग बद्र और जंग उहद और जंग ख़ंदक में शरीक थे। यह कुछ रिवायतों में मिलता है कि बैअत रिज़वान में पहले बैअत करने वाले हज़रत अबु सिनान बिन मिहसन असी थे लेकिन यह सही नहीं क्योंकि हज़रत अबू सिनान बनो क़ुरैज़ा के घेराव के समय 5 हिजरी को बीमर 40 साल की उम्र में वफात पा चुके थे और बैअत रिज़वान के अवसर पर बैअत करने वाले उनके बेटे हज़रत सिनान बिन अबू सिनान थे। हज़रत अबु सिनान बिन मिहसन की मृत्यु उस समय हुई जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनो क़ुरैज़ा का घेर किया हुआ था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें क़ुरैज़ा के कब्रिस्तान में दफन कर दिया। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 69 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत क़ैस बिन अस्सकन अंसारी। उनका उपनाम अबू ज़ैद था। हज़रत कैस के पिता का नाम सकन बिन ज़ऊरा था। आपका संबंध अंसार के कबीला ख़ज़रज की शाखा बनो आदि बिन नज्जार से था। हज़रत क़ैस अपने उपनाम अबू ज़ैद से अधिक प्रसिद्ध थे। आप जंग बद्र और जंग उहद और जंग खंदक और बाकी सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। आप की गिनती उन सहाबा में होती है जिन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में कुरान जमा किया।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 389 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबह जिल्द 4 पृष्ठ 406 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003) (असाबह जिल्द 5 पृष्ठ 362 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत अनस बिन मालिक कहते हैं कि आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में अंसार के चार सहाबा ने क़ुरआन जमा किया और वे चार सहाबी ज़ैद बिन साबित, मुआज़ बिन जबल, उबयी इब्न कअब और अबू ज़ैद बिन सकन थे और अबू ज़ैद के बारे में हज़रत अनस कहते हैं कि यह मेरे चाचा थे।

(सही अल्बख़ारी किताब मनाक़िब अंसार अध्याय मनाक़िब ज़ैद बिन साबित हदीस 3810)

8 हिजरी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू ज़ैद अंसारी और हज़रत अम्र बिन आस अस्सहमी को जुलंदी के दो बेटों उबैद और जैफर के पास एक पत्र देकर रवाना किया जिस में उन्हें इस्लाम की दावत दी थी और दोनों से कहा कि अगर वे लोग हक की गवाही दें और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करें तो अम्रो उनके अमीर होंगे और अबू ज़ैद उनके इमामुस्सलात होंगे। अर्थात कि उनकी धार्मिक स्थिति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र में अधिक अच्छी होगी या कुरआन की जानकारी अधिक था। फरमाया वह इमामुस्सलात होंगे और उनमें इस्लाम का प्रकाशन करेंगे और उन्हें कुरआन और सुन्नत की शिक्षा देंगे। यह दोनों ओमान गए और उबैद और जैफर से समुद्र तट के किनारे सुहार में मिले। उन्हें आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पत्र दिया उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, दोनों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो उन्होंने वहाँ के अरबों को इस्लाम की दावत दी और वे भी इस्लाम लाए। अब यह प्रचार के माध्यम से इस्लाम फैल रहा है। वहाँ कोई युद्ध, हत्या और तलवार तो नहीं गई थी और बहरहाल इन अरबों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया। अम्रो और अबू ज़ैद ओमान ही में रहे यहाँ तक कि आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का निधन हो गया। कुछ के निकट अबू ज़ैद इससे पहले मदीना आ गए थे।

(फतूहुल बुलदान पृष्ठ 53 ओमान मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2000) हज़रत क़ैस की शहादत जसर के दिन के अवसर पर हुई। (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 389 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई) हज़रत उमर के दौरे खिलाफ़त में ईरानियों के साथ युद्ध में फरात के दरिया पर जो पुल तैयार किया गया था उसी के कारण इस युद्ध को जसर का दिन कहा जाता है।

(मअजबुल बुलदान जिल्द 2 पृष्ठ 162-163 जसर मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

फिर जिन सहाबी का उल्लेख है उनका नाम है अबुल यसर कअब बिन अमरो है उनका उपनाम अबुल यसर था और अबुल यसर का संबंध कबीला बनू सलमा था। उन के पिता अम्रो बिन अबाद थे। माँ का नाम नसीबह बिन्त अज़हर था वह कबीला सलमा से ही थीं। आप बैअत उक़बा में शामिल हुए और जंग बद्र में भी शिरकत की। जंग बदर के दिन आप ने हज़रत अब्बास को गिरफ्तार किया था। आप ही वह सहाबी हैं जिन्होंने जंग बद्र में मुशरिकीन का झंडा अबू अज़ीज़ बिन उमेर के हाथ से छीन लिया था। आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अन्य जंगों में शामिल रहे। आंहज़ोर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद युद्ध सिफ़्फ़ीन में भी हज़रत अली के साथ शामिल हुए।

(असदुल गाबह जिल्द 6 पृष्ठ 326-327 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003)

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अब्बास को जंग बद्र में कैदी बनाने वाले हज़रत उबैद बन औस थे। (असदुल ग़ाबह जिल्द 3, पृष्ठ 528-529 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

बहरहाल इब्ने अब्बास से मरवी है कि इब्ने अब्बास यह कहते हैं कि जंग बद्र के दिन जिस आदमी ने हज़रत अब्बास को गिरफ्तार किया था उसका नाम अबुल यसर था। अबुल यसर तब दुबले पतले आदमी थे। जंग बदर के समय आप बीस वर्ष के जवान थे जबकि हज़रत अब्बास भारी शरीर के मालिक थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबुल यसर से पूछा कि आप ने अब्बास को कैसे बंदी कर लिया, कैसे कैदी बना लिया? तुम तो बिल्कुल दुबले पतले और वह बड़े लंबे-चौड़े कद के हैं और भारी शरीर वाले हैं जिस पर उन्होंने बताया कि हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक व्यक्ति ने मेरी मदद की थी जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था और न ही कभी बाद में देखा है और उसका हुलिया ऐसा ऐसा था। उसका हुलिया वर्णन किया जिस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: لَقَدْ اَعَانَكَ عَلَيْهِ مَلَكٌ كَرِيْمٌ. बेशक, इस में तेरी एक सम्माननीय फरिशते ने सहायता की

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 4 पृष्ठ 8 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990)

हज़रत इब्न अब्बास वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन फरमाया कि जो व्यक्ति दुश्मन को मार डालेगा, उस के लिए अमुक अमुक चीज़ होगी। इसलिए मुसलमानों ने सत्तर बहुदेववादियों को मार डाला और सत्तर बहुदेववादियों को कैद कर लिया। हज़रत अबूल यसरदो कौदियों को लाए और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल आप ने हम से वादा किया था कि जो कोई मारेगा उसके लिए अमुक अमुक होगा और इसी तरह जो कोई कैदी बनाऐगा उस के लिए अमुक होगा। मैं दो बंदी लाया हूं। (अल-मुसन्फि

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अबदुर्रज़ज़ाक जिल्द 5 पृष्ठ 239 किताबुल जिहाद बाब ज़िक्र हदीस 9483 अल-मकतबुतुल इस्लामी 1983 ई) एक रिवायत के अनुसार, जंग बदर में अबुल बख़तरी को कत्ल करने वाला हज़रत अबुल यसर थे।

(असदुल ग़बाह खंड 6 पृष्ठ 92 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत सलामत बिन्त मअकल वर्णन करती हैं कि हुबाब बिन अमरो की ग़ुलामी में थी उन से मेरे यहां एक लड़का भी पैदा हुआ था। उन की वफात पर उन की पत्नी ने मुझे बताया कि अब तुम्हें हुबाब के कर्ज़ों के बदला में बेच दिया जाएगा। तुम्हारी स्थिती दासी की थी इस लिए तुम बेच दी जाओगी। कहती हैं में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाजिर हुई और सारी अवस्था बताई। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि हुबाब् बिन अम्रो के तर्का का वारिस कौन है? तो बताया गया कि उन के भाई अबुल यसर जिम्मेदार हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बुलाया और फरमाया कि इसे मत बेचना यह दासी है बल्कि आज़ाद कर दो। और जब तुम्हें पता चला कि मेरे पास कोई ग़ुलाम आया है तो मेरे पास आना। मैं इस के बदले में तुम्हें कोई दूसरा ग़ुलाम दे दूंगा।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 726 हदीस 27569 मस्नद सलामा बिन्त मअकल प्रकाशक आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) अत: इसी तरह हुआ। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें आज़ाद कर दिया और उन को एक ग़ुलाम दे दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन में एक घटना वर्णन करते हैं कि उबाद बिन वलीद रिवायत करते हैं कि हम एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी अबुल यसर को मिले। उस समय उन के साथ एक ग़ुलाम भी थी हम ने देखा कि एक धारीदार चादर और यमनी चादर उन के शरीर पर थी। और इसी तरह एक धारीदार चादर और एक यमनी चादर उन के ग़ुलाम के शरीर पर थी। मैंने उन से कहा कि चाचा तुम ने इस तरह क्यों किया कि अपने ग़ुलाम की धारीदार चादर ख़ुद ले लेते और अपनी चादर उस को दे देते या उस की यमनी चादर ख़ुद ले लेते और अपनी धारीदार चादर उसे दे देते ताकि दुम दोनों के शरीर पर एक तरह को जोड़ा हो जाता। हज़रत अबुल यसर ने मेरे सिर पर, रिवायत करने वाले वर्णन करते हैं कि मेरे सिर पर हाथ फेरा और मेरे लिए दुआ की और फिर मुझे कहने लगे भतीजे मेरी इन आंखों ने देखा है और मेरे कानों ने सुना है और मेरे इस दिल ने अपने अन्दर स्थान दिया है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे कि अपने ग़ुलाम को वही खाना खिलाओ जो तुम ख़ुद खाते हो और वही लिबास पहनाओ जो तुम ख़ुद पहनते हो। अत: मैं इस बात को अधिक पसन्द करता हूं कि मैं दुनिया में अमवाल में से ग़ुलाम को बराबर का हिस्सा दूं इस की तुलना में कि कयामत के दिन मेरे सवाब में से कमी कर दी जाए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए 383)

अबूल यसर वर्णन करते हैं कि बनू हराम के अमुक अमुक आदमी का माल मेरे जिम्मे था। मैंने कुछ पैसे उसे दिए थे। उस ने मुझे कर्ज़ देना था। उस के ज़िम्मे कर्ज़ था। मैं उस के पास गया। मैंने सलाम किया और पूछा कि वह कहाँ है, तो उसने कहा कि वह घर में है? घर से कोई उत्तर मिला कि नहीं। कहते हैं कि फिर उनका बेटा जो यौवन होने के निकट था। अभी परिपक्व नहीं हुआ है। वह बेटा मेरे पास आया मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे पिता कहाँ हैं? उसने कहा कि उसने आप की आवाज़ सुनी और मेरी माँ के छपरकट में घुस गया, उसने तुम्हारी आवाज़ सुनी और चारपाई के पीछे छिप गया। तो मैंने कहा मेरे पास बाहर आओ। फिर मैंने आवाज़ सुनी क्योंकि मुझे पता चला गया है कि तुम कहाँ हो, उस घर वाले कर्ज़ वाले को कहा कि तुम बाहर आ जाओ। मुझे पता है कि तुम कहां हो? अबुल यसर कहते हैं कि अत: वह बाहर आया। मैंने कहा कि तुम क्यों मुझ से छुपते फिर रहे हो? उसने कहा, अल्लाह की कसम मैं आपको बताता हूँ और आपसे झूठ नहीं बोलूंगा। अल्लाह की कसम! मैं डरा कि तुम्हें बताऊं और तुम से झूठ बोलूं और तुम से वादा करूं और फिर मैं तुमसे वादा तोडूं कि फिर मैं आऊं, झूठ बोल कर कहूं कि अच्छा मैं अमुक दिन या अमुक समय में तुम्हारी रकम दे दूंगा परन्तु वादा पूरा न करूं। और झूठ बोलूं। फिर कहने लगे कि आप तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी हैं और अल्लाह की कसम मैं मुहातज हूं। अबुल यसर कहले लगे मैंने कहा अल्लाह की कसम? अर्थात उस से सवाल किया कि क्या तुम अल्लाह की कसम वास्तविक रूप से खाते हो? उस ने कहा हां अल्लाह की कसम मैंने कहा अल्लाह की कसम? उस ने कहा हां अल्लाह की कसम मैंने फिर तीसरी बार कहा अल्लाह की कसम? उस ने कहा हां अल्लाह की कसम। कहते हैं कि हज़रत अबुल यसर उस समय अपना लिखा हुआ वापस ले आए और अपने हाथ से उसे मिटा दिया जो लिखा हुआ था। कर्ज़ा वापस देने की तहरीर थी जो लिखा हुआ था और कहा कि अगर तुम्हे अदा करने की तौफीक़ मिले तो अदा कर देना वरना तुम आज़ाद हो। कहते हैं कि मैं गवाही देता हूं कि मेरी इम दो आंखों की ज्योति अर्थात अपनी दोनों उंगलियां अपनी आंखों पर रखीं। और मेरे दे कानों का सुनना और मेरे दिल ने इस बात को याद रखा है और उन्होंने दिल के स्थान पर इशारा किया कि मैं गवाही देता हूं कि मैं इस समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देख रहा हूं जब यह तहरीर मिटाई और आज़ाद किया तो कहते हैं कि मैं गवाही देता हूं कि मैं अपनी आंख़ों से, अपने कानों से, अपने दिल से कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देख रहा हूं। और आप फरमा रहे थे कि जिस ने किसी मजबूर को मोहलत दी या उस का माली बोझ उतार दिया अल्लाह तआला उसे अपने साया में स्थान देगा।

(सही मुस्लिम किताबुज़्ज़ुहद हदीस जाबिर अत्तवील हदीस 7512)

तो मैंने तुम्हारा बोझ उतार दिया क्योंकि मुझे अल्लाह तआला की छाया की तलाश है। यह एक अन्य उदाहरण है अल्लाह तआला के भय और डर का। इच्छा तो बस यह है कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त हो न कि सांसारिक लाभ।

हज़रत अबुल यसर कअब बिन अम्रो हदीसों के वर्णन करने में बहुत सावधानी से काम लेते थे। एक बार उबादत बिन वलीद से दो हदीसें वर्णन कीं और अवस्था यह थी कि आंख और कान पर और उंगली रख कर कहते थे कि इन आंखों ने यह घटना देखी है और इन कानों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वर्णन करते हुए सुना।

(सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़ुहद बाब हदीस जाबिर हदीस 7512 ,7513)

हज़रत अुबल यसर के एक बेटे का नाम उमैर था जो उम्मे उम्रो के गर्भ से थे। हज़रत उम्मे उम्रो तथा हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की फूफी थीं। आप के एक बेटे यज़ीद बिन अबी यसर थे। जो कि लुबाबा बिनत हारिस के गर्भ से थे। एक बेटे का नाम हबीब था जिन की माता उम्मे वलद थीं। और बेटी का नाम आयशा था जिन की माता का नाम उम्मे अर्या था आप जंग बदर में शरीक हुए थे। उस समय आप की आयु 20 वर्ष की थी। आप की वफाक अमीर माविया के ज़माना में 55 हिजरी में हुई।

ये लोग थे, अजीब शान थी इन की जिन्होंने हमें अल्लाह से इबादत के तरीके सिखाए। साथ ही अल्लाह तआला से भय के तौर-तरीके भी सिखाए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातों को दिल की गहराई से स्वीकार करते हुए पूर्ण इताअत के तरीके भी सिखाए। अल्लाह तआला उन लोगों के स्तर ऊंचा करे।

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 15 से 21 फरवरी 2019 पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

वाले नबियों के प्रमाणित होते हैं। इसी तरह हमारे पूर्ण हिदायत देने वाले हादी अगर आरम्भिक तेरह वर्षों की मुसीबतों में मर जाते, तो उन के और बहुत से उच्च आचरण प्रमाणित न होते, परन्तु दूसरा ज़माना जब विजय का आया तो वे मुजरिम के रूप में पेश किए गए तो उस से आप की सिफत रहम तथा दया का प्रमाण मिला और इस सेयह प्रकट हुआ कि आप के काम में कोई ज़बरदस्ती न थी। बल्कि प्रत्येक अपने रंग में हुआ। इस तरह आप के बहुत से अन्य आचरण भी प्रमाणित हैं। अत: अल्लाह तआला ने यह जो फरमाया कि نَحۡنُ اَوۡلِيٰٓؤُكُمۡ فِي الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِي الۡاٰخِرَةِ (हाम मीम सिज्दा 32) कि हम इस दुनिया में भी और भविष्य में भी मुत्तकी के दोस्त हैं यह आयत भी उन अज्ञानियों के विरोध में है जिन्होंने ज़िन्दगी में फरिशतों के उतरने से इन्कार किया। अगर मृत्यु में फरिशतों का उतरना था तो दुनिया की ज़िन्दगी में ख़ुदा तआला किस तरह वली हुआ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 10 से 12)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

मौलवी और वे लोग हैं जो अल्लाह तआला के डर के बजाय इन मौलवियों से जिन्होंने धर्म को बिगाड़ दिया है डरते हैं लेकिन हम ने अपना काम नहीं छोड़ना दुनिया को सही रास्ता दिखाने के लिए हर अहमदी योगदान अदा करना है और करते चले जाना है इन्शा अल्लाह। इसके लिए कोशिश भी करें और दुआ भी करें और सबसे बढ़कर अपने व्यावहारिक नमूने इस्लाम की खूबियां दुनिया में प्रदर्शित करें जिस तरह कई नए आने वाले यह प्रकट कर रहे हैं जिस के कुछ उदाहरण मैंने दिए हैं। अल्लाह तआला सब को इस की तौफ़ीक़ प्रदान करे। अल्लाह तआला आप सबको जलसा की बरकतें जारी रखने हमेशा तौफ़ीक़ अता फरमाता रहे और ख़ैरियत से आप लोग अपने घरों को जाएं और आगे भी इंशा अल्लाह जलसा में शामिल हों। अब आपके घरों में भी शांति हो। आप के बच्चों की तरफ से आप की आंखों में ठण्डक हो। अल्लाह तआला आपको हर परेशानी और कठिनाई से बचाए। आमीन अब दुआ कर लें

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब तरीके के अनुसार अलग प्रकाशित भी होगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 6 बज कर 10 मिनट तक जारी रहा इसके बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना की हाज़री की घोषणा करते हुए कहा कि इस साल जलसा सालाना में कुल हाज़री 39710 है जिसमें से औरतों की हाज़री 19568 और मर्दों की हाज़री 19013 है। इसके अलावा जो तब्लीग़ी मेहमानों शामिल हुए 1129 थे। बच्चों के स्कूल जाने के कारण हाज़री पिछले साल की तुलना में कम रही है। इस जलसा में 99 देशों ने प्रतिनिधित्व किया है और विभिन्न देशों के 3833 मेहमान जलसा सालना जर्मनी में शामिल हुए हैं।

बाद में, कार्यक्रम के अनुसार, विभिन्न समूहों ने नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। पहले जर्मन भाषा में एक समूह ने दुआ की नज़्म पेश की और बाद में अफ्रीकी दोस्तों से मिलकर समूह में अपने विशिष्ट परंपरागत तरीके से अपना कार्यक्रम पेश किया और कलमा-ए-तैयबा का विर्द किया। इस के बाद अरब लोगों ने कसीदा प्रस्तुत किया। बाद में जामिया अहमदिया जर्मनी के छात्रों ने उर्दू में एक तराना प्रस्तुत किया। फिर एक स्पेनिश भाषा नज़्म प्रस्तुत की गई। इस के बाद मैसेडोनिया से आए हुए नए अहमदियों ने मैसेडोनिया की भाषा में एक नज़्म पेश की। अंत में ख़ुद्दाम ने उर्दू भाषा में ख़िलफत के साथ उर्दू भाषा में अहद बांधने के विषय पर दुआ की नज़्म पढ़ी।

जैसे ही यह कार्यक्रम अपने अंत को पहुंचा जमाअत के दोस्तों ने बड़े रोमांच और जोश के साथ नारे बुलंद किए और पूरा वातावरण नारों की आवाज़ से गूंज उठा। हर छोटा बड़ा, जवान आदमी अपने प्रिय आक़ा के साथ अपनी मुहब्बत, निष्ठा और महिमा व्यक्त कर रहा था। यह जलसा के अंत के आखिरी क्षण थे और दिल प्यार और प्रेम और ख़ुशी की भावनाओं से भरे हुए थे। इस माहौल में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बढ़ा कर अपने आशिकों को अस्सलामो अलैकुम और अलविदा कहा और नारों की आवाज़ में जलसा गाह से बाहर आए और कुछ देर के लिए अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

नई बैअत करने वालों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार 7 बज कर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए और विभिन्न देशों से संबंध रखने वाले नई बैअत करने वालों ने हुज़ूर अनवर से मिलने की सआदत पाई। इन नई बैअत करने वालों की संख्या 24 थी और 6 बच्चों भी उनके साथ शामिल था। इन महिलाओं का सम्बन्ध जर्मन, तुर्की, कुर्द, कोसोवो, फ्रांस और सीरिया से बांग्लादेश से था। इनमें से 6 महिलाएं थीं जिन्होंने आज ही बैअत की तौफीक़ पाई थी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के पूछने पर सैक्रेटरी तरबियत नौ मुबाईन ने कहा कि जलसा के दौरान हमारी 6 बैअतें हुई हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर कि ये कौन हैं, उन सभी ने अपने हाथ खड़े किए।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर सैक्रेटरी तरबियत ने कहा कि यह इन को तब्लीग़ की जा रही है और हमारे साथ संपर्क में थीं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "अब उन्हें एहसास हुआ है कि वे अहमदी हो सकती हैं।

एक नई अहमदी महिला ने सवाल किया कि अल्लाह तआला से सम्बन्ध स्थापित करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। और इस्लामी नाम रखने के लिए आवेदन किया। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करें, क्योंकि सभी शक्तियों का स्रोत ख़ुदा तआला की हस्ती ही है। तभी, अल्लाह तआला के साथ आपका रिश्ता मज़बूत होगा। हुज़ूर अनवर ने उनका नाम नाइलह रखा।

एक और नई बैअत करने वाली औरत ने दुआ का निवेदन किया कि हम अच्छे अहमदी बनें। इसी तरह अपना इस्लामी नाम रखने का निवदेन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला आपको तौफीक़ दे। आप ख़ुद भी अपने लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला आपको सीधे रास्ते पर चलाए। इहदेनस्सेरातल मुस्तक़ीम की दुआ हमेशा किया करें कि अल्लाह तआला हमें सीधे रास्ते पर चलाए। नाम के बारे में हुज़ूर अनवर ने पूछा कि मैंडी का क्या मतलब है और किसने रखा था? उस पर महोदया ने कहा कि अर्थ का पता नहीं। बाकी भाई ने यह नाम रखा था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आप नाम क्यों तब्दील करवाना चाहती हैं। इस्लाम के आरम्भ से पहले ही अबू बकर, उमर, उस्मान और अली नाम पहले से ही थे। यह ग़ैर इस्लामी नाम तो नहीं हैं ख़दीजा असमा और आयशा ना भी तो थे या आप नाम ख़िलाफत की बरकत के कारण चाहती हैं? इस पर महोदया ने कहा कि यही कारण है। इस पर हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उनका नाम नासिरा रखा। और फरमाया कि नसिरा का अर्थ है मदद करने वाली। इसलिए आप ख़िलाफत की मदद करने वाली बनें।

एक और महिला ने कहा कि उसका नाम मार्टिना है, वह हुज़ूर अनवर को धन्यवाद देना चाहती है कि उस ने हुज़ूर अनवर को पत्र लिखा, और हुज़ूर अनवर ने जवाब लिखा। महोदया ने भी अपना इस्लामी नाम का अनुरोध किया। हूज़ुर अनवर ने उन का नाम मारिया रखा।

एक नई बैअत करने वाली महिला अंजा साहिबा ने कहा कि मैंने हुज़ूर अनवर को पत्र लिखा था, जिस का हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उत्तर लिखा था, जिस के कारण वह आज यहां बैठी है। यह कहकर वह भावनाओं के कारण रोने लगी ।

एक नई बैअत करने वाले की दो महीने बाद शादी थी। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अल्लाह फज़्ल फरमाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर कि वह किरदिस्तान के उस भाग में है जो इराक़ में शामिल है।

एक नई बैअत करने वाली महिला ने कहा कि उनकी आंखों की कमज़ोरी की समस्या है रेटिना का मस्ला है। वह धर्म की सेवा करना चाहती है उस का भाई जेल में है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया। अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए।

एक नई बैअत करने वाली महिला ने अपना सपना वर्णन किया जो कि उसने एक साल पहले देखा था कि दुनिया की स्थितियां युद्ध की हैं और एक तरफ अंधेरा है। तथा एक तरफ रौशनी है। जब वह अंधेरे में चलते हैं, तो दूर से प्रकाश नज़र आता है। इस रोशनी से, एक तरफ, उन्हें एक बड़ी आवाज़ सुनाई देती है कि एक अहमदी महिला नौ सहर उसे और बुला रही है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, नौ सहर का अर्थ है सुबह की रोशनी।

एक महिला मेलानी साहिबा ने कहा कि मैंने इस साल अप्रैल में बैअत की थी। मैं भी इस्लामी नाम का अनुरोध करती हूं। हुज़ुर अनवर ने उन का नाम मर्यम रखा।

तुर्की से आने वाली एक महिला ने कहा कि मुझे पर्दा करने में परेशानियां हैं क्योंकि मेरा परिवार इसे पसंद नहीं करता है। इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने कहा, क्या आपका परिवार मुसलमान नहीं है? इस पर महोदया ने कहा कि वह नवीन विचारों के हैं और मेरे निर्णय से ख़ुश नहीं हैं। महोदया ने कहा कि वे बहुत दुखी हैं। इसी तरह अपना इस्लामी नाम रखने का निवेदन किया। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि आप का नाम क्या है? इस पर महोदया ने कहा कि कीरा है और इस का अर्थ है एक मजबूत महिला। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :कि आप तो पहले से ही मजबूत हैं। आप नाम बदलना क्यों चाहती हैं? हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए हिना नाम रखा।

एक नई बैअत करने वाली बहन ने अस्सलामो अलैकुम का तोहफा पेश करते हुए अपने भाई के लिए दुआ का निवेदन किया कि वह भी इस्लाम को स्वीकार करे। उनका परिवार उनसे साथ बहुत ख़ुश है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, आप उन से बेहतर हैं। इस्लामी नाम के अनुरोध पर, हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए नादिया नाम रखा।

एक नई बैअत करने वाली बहन ने अस्सलामो अलैकुम का तोहफा पेश करते हुए कहा कि मेरे सम्बन्ध तुर्की से है और मुझे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। मेरी इच्छा है कि हुज़ूर नई अहमदी लड़कियों के लिए एक संदेश दें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि दुआ करें, अल्लाह की इबादत करें उस के आदेश का पालन करें बन्दों के अधिकार दें और

दूसरों का सम्मान करें; यही एकमात्र तरीका है।

एक नई बैअत करने वाली महिला ने कहा कि वह अभी काम के दौरान बाहर निकलते हुए भी कोट और स्कार्फ नहीं लेती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, "धीरे-धीरे शुरू करें। पहले छोटा सा स्कार्फ लें।

आख़िर में एक नई बैअत करने वाली बहन ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि वह एक वर्ष से अहमदी हैं और दो तीन महीने बाद कोनसिल में उनकी शादी हुई थी। महोदय ने अपने लिए और पिता के लिए दुआ का अनुरोध किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, "अल्लाह तआला फज़्ल करे।

हुज़ूर अनवर ने छोटे बच्चों और बच्चियों को दया करते हुए चॉकलेट दिए। नई बैअत करने वालों का यह प्रोग्राम हुज़ूर अनवर के साथ कार्यक्रम 7 बज कर 40 मिनट तक जारी रहा।

नई बैअत करने वाले मर्दों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से मुलाक़ात

इस के बाद 7 बज कर 45 मिन्ट पर नई बैअत करने वाले मर्दों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात को सौभाग्य पाया इन नई बैअत करने वालों की संख्या 25 के क़रीब थी। जिन में जर्मनी, अरब और तुर्की से सम्बन्ध रखने वाले शामिल थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी सब नई बैअत करने वालों से परिचय प्राप्त किया उनमें से कुछ ने कहा कि उन्होंने आज बैअत की है। एक पाकिस्तानी नौजवान ने कहा कि वह लंबे समय से जर्मनी में रह रहा है। उन्होंने भी बैअत की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, पाकिस्तान में आप को मार पड़ेगी। इस पर महोदय ने कहा कि वह तैयार है। पाकिस्तान में हमारा आधा परिवार अहमदी है। सीरिया के एक मित्र ने कहा कि उन्होंने छह साल पहले बैअत की थी और अब मैं पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात कर रहा हूं।

एक नई बैअत करने वाले दोस्त ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर अपना दिन कैसे व्यतीत करते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने उनसे फरमाया, जैसा कि आपने आज देखा है इसी तरह से। सब कुछ आप के सामने है। मेरे सारा सप्ताह ही इस तरह गुज़रता है। कोई सप्ताहांत नहीं, कोई छुट्टी नहीं है। इस तरह रोज़ दिन व्यस्तता है।

एक जर्मन नई बैअत करने वाले ने कहा कि उस ने अहमदियत स्वीकार करने से पहले नियमित अध्ययन किया है। वेब साइट पर जाकर, अनुसंधान किया और अंत निष्कर्ष पर पहुंचा कि जमाअत अहमदिया एक सच्ची जमाअत है और सही रास्ते पर है। तब मैंने जून में बैअत कर ली।

सोमालिया देश से संबंधित एक नई बैअत करने वाले ने कहा कि उन्होंने पिछले साल बैअत की थी। महोदय ने दुआ का अनुरोध किया इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया "अल्लाह तआला फज़्ल फरमाए।

एक बच्चे ने कहा कि मैं 13 वर्षीय बच्चा हूं और मैं जर्मनी में रहता हूं और मैं अहमदी हूं।

एक साहिब जिन्होंने अभी तक बैअत नहीं की थी कहने लगे कि एक अप्रैल से अहमदिया जमाअत का दोस्त हूं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, यह पर्याप्त है।

एक दोस्त ने कहा कि मैंने कल बैअत की है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :, तो आज आप की बैअत कन्फर्म हो गई।

श्रीलंका से सम्बन्ध रखने वाले एक साहिब ने निवेदन किया कि मैंने जुलाई में बैअत की है और आज मैं बैअत के समारोह में शामिल हो कर हाथ पर बैअत की है।

एक नई बैअत करने वाले ने कहा कि मेरे पिता ने 2007 ई में बैअत की थी और मैंने वर्ष 2017 ई में की है । मैं अब 17 साल का हूँ। हुज़ूर अनवर ने कहा, "जब आपके पिता ने बैअत की थी तो उस समय आप की आयु 6 साल की थी।

एक नई बैअत करने वाले ने कहा कि मेरा मामला पारित हो गया है। कृपया मेरे माता-पिता के लिए दुआ करें कि वे सीरिया से यहां आ जाएं। मेरी बहन की आयु 16 साल से अधिक है, उसे वीजा प्राप्त करना मुश्किल है। उसका पीछे रहने की समस्या है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने उनसे कहा, अपनी बहन के लिए अपील कर के देखें।

नई बैअत करने वालों की यह मुलाकात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ 8:00 बजे समाप्त हुई। अंत में, सभी नई बैअत करने वालों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ बारी बारी तस्वीर ली

कालस्रोए से फ्रैंकफर्ट प्रस्थान

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार कालस्रोए से फ्रैंकफर्ट के रवानगी हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और कारवां सवा आठ घंटे यहां से बैयतुस्सुबूह फ्रैंकफ्रंट के लिए रवाना हुआ। जब हुज़ूर अनवर का गाड़ी जलसा गाह से बाहर निकल रही थी तो सड़क के दोनों किनारों पर खड़े हज़ारों लोग, पुरुष और महिलाएं और बच्चे और बड़ों ने हाथ उठाया और अपने प्रिय आक़ा को अलविदा कहा। जमाअत के लोग निरंतर नारे लगा रहे थे। बच्चियां ग्रुपस की शक्ल में विदाई नज़्में पढ़ रही थीं। लगभग दो घंटे के सफर के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बैयतुस्सबूह 10 बजे, 10 मिनट पर आए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने 10 बज कर 30 मिन्ट पर तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

बैअत करने वाले दोस्तों की प्रतिक्रियाएं

आज अल्लाह तआला के फज़्ल से 42 लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। इन बैअत करने वालों का सम्बन्ध 17 विभिन्न क़ौमों से है। बैअत करने वाले लोगों की ख़ुशी सीमा से बाहर थी। कुछ लोगों ने बैअत के बाद अपनी भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया।

* लिथुआनिया के एक युवा छात्र यकूबस चाएबसी ने कहा कि जलसा सालना में भाग लेकर लग रहा है कि मैं इस जमाअत का हिस्सा हूं। अब मैं जीवन के उद्देश्य को समझता हूं। मैं हुज़ूर से मिलने से बहुत ख़ुश हूं मैं हुज़ूर के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूं। हुज़ूर बहुत आभारी और प्यार करते वाले हैं। हुज़ूर अनवर से बात करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि दिल की गहराई से वह मुझ से मुहब्बत करते हैं। मैंने इस्लाम की सच्चाई को पा लिया है और मैं आज बैअत कर के अहमदिया जमाअत में शामिल होता हूं। मैं अक्सर संदिग्धता महसूस करता था, लेकिन अब मैं अपने ईमान में मज़बूती पैदा कर के बाकी जिन्दगी गुज़ारने की कोशिश करूंगा।

* एक सीरिया के नौजवान अली जासिम साहिब कहते हैं: अलहम्दो लिल्लाह एक सच्ची जमाअत और सच्चे लोगों का जलसा, जो एक-दूसरे से प्यार करने वाले और मेहमानों से भी प्यार करने वाले और आध्यात्मिकता से भरपूर जलसा मैंने देखा। जब मैं यहाँ आया तो लोगों की इतनी बड़ी संख्या देखकर मुझे आशचर्य लगा और जब मैंने जमाअत अहमदिया के ख़लीफा को देखा तो मैंने अपने अंदर एक अजीबोग़रीब बदलाव महसूस किया जिसने मेरे दिल को मुहब्बत से भर दिया और मैंने ख़लीफा के चेहरे पर नूर देखा है मैं सच्चाई की खोज में था जो अल्हम्दो लिल्लाह मैंने यहां पाई और मैंने सच्चाई और प्रकाश का मार्ग पा लिया, और मैंने पूरे खुले दिल से बैअत करने का फैसला किया।

अल्बानिया से आए एक दोस्त, मोगंल बरक साहिब कहते हैं मैं अहमदियत का गंभीर विरोधी था। मेरा भाई और मेरा दोस्त अहमदियत में शामिल हो गए थे। मैं प्रत्येक कोशिश करता कि की मेरे भाई को अहमदियत से नफरत हो जाए। आखिरकार हमारे बीच दृढ़ संकल्प हुआ कि दोनों दुआ करते हैं हमारे बीच जो सच्चा होगा वह जीत जाएगा। लगातार दुआ करने के बाद मेरा दिल चाहने लगा कि पहले अपनी आँखों से जाकर जलसा सालाना और समय के ख़लीफा को देखूँ ताकि जो भी निर्णय करना है वह अधूरे ज्ञान पर आधारित न हो। तो पिछले साल मैं जलसा में शामिल हुआ तो मन में कुछ संतुष्टि थी लेकिन दिल में असहजता थी। तो जब निर्णायक समय आया और मुझे हुज़ूर का चेहरे दिखाई दिया तो तो सभी शत्रुता, घृणा, वैर, और सभी संदेह मेरे दिल से निकल गए। हुज़ूर का मुबारक चेहरा मेरे दिल पर छप गया। अब मेरे पास कोई इनकार का कारण नहीं था। तो मैं जलसा से वापस आया, और मैंने वापस आकर बैअत का फार्म भर दिया। अब मैं इस बार आया हूं और हुज़ूर के हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस बीच, मुझे एक और समस्या आई कि मेरी मंगेतर अहमदी नहीं बनना चाहती था। तो कोशिश कर के उसे अपने साथ लाया हूं और मेरी मंगेतर ने हुज़ूर अनवर का लज्ना से ख़िताब सुना है और उस ने अहमदी होने का फैसला किया। मेरी मंगेतर ने कहा कि जिस जमाअत के पास इतना शफ़ीक, सहानुभूति करने वाला और प्रेम करने वाला ख़लीफा हो उसे एक अस्तित्व से ही सारी बरकतें मिल गईं, जो बाकी मुसलमानों के पास नहीं हैं। अब हम जितनी जिल्दी हो सके शादी करेंगे।

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆

वक्फ़े नौ किलास

सय्यदना हज़रत खलीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़

14 अक्तूबर 2016 ई को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफाते नौ तथा वाकफीन नौ के साथ किलास आयोजित की। इस कक्षा के कुछ प्रमुख सवाल तथा जवाब अख़बार बदर उर्दू 1 दिसम्बर 2016 ई के सहयोग से पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।(सम्पादक)

एक बच्ची ने सवाल किया कि कैसे पता लगे कि ख़वाब शैतानी है या अल्लाह से है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: मनोविज्ञान के जो विशेषज्ञ हैं वे कहते हैं कि हर इंसान को रात में तीन चार ख़वाब आते हैं। कुछ याद रह जाते हैं कुछ इंसान भूल जाता है या फिर सारे भूल जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि हमें ख़वाब नहीं आती। वह इतनी गहरी नींद सोते हीं कि उन्हें पता ही नहीं लगता कि रात क्या हुआ। ख़ुवाबें प्रत्येक को आती हैं। कई बार अच्छी ख़वाब भी आती है। यदि मनुष्य का दिमाग़ नेक है, उसके विचार नेक हैं उस को अच्छे सपने आते रहेंगे। अगर रात को तुम गंदी फिल्म देखकर सोए हो या कोई और बेहूदा चीज़ देख कर सोए हो तो कई बार इस प्रकार की ख़ुवाबें आती हैं। दिमाग़ पर जिन बातों का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। कई ख़ुवाबें होती हैं जो अल्लाह तआला विशेष रूप से किसी मार्गदर्शन के लिए देता है। इसमें कुछ संदेश होते हैं। कुछ बातें समझ नहीं आतीं। हज़रत यूसुफ के ज़माना में जिस तरह राजा ने ख़वाब देखा था जो तफसीर करने वाले थे उन्होंने कहा कि यह तुम्हारे मानसिक विचार हैं जो एक ख़वाब आ गई। सात गाए और सात बालियों का कोई मतलब नहीं। लेकिन जो कैदी हज़रत यूसुफ के साथ थे उनमें से जो एक रिहा हुआ था, हज़रत यूसुफ ने उससे कहा था कि राजा को जाकर मेरे विषय में बताना। जब उसने राजा की यह ख़वाब सुनी तो उसे हज़रत यूसुफ की याद आ गई। फिर हज़रत यूसुफ ने इसकी व्याख्या की कि कैसे तुम पर अच्छा समय आएगा तो अकाल का समय आएगा। इस अवधि में जो तुम्हारी अच्छी फसलें होंगी उन्हें अकाल वाले वर्षों के लिए संभाल कर रख लेना। फिर हुज़ूर अनवर ने बच्ची को बताया कि फसल क्या होती है हारवीसटिंग क्या है? हुज़ूर अनवर ने कहा कि गेहूं का एक हिस्सा होता है जिसके अंदर दाने भरे होते हैं उसे सिट्टा कहते हैं। बहरहाल वह एक ख़वाब था जिसकी व्याख्या हज़रत यूसुफ ने की। फिर अकाल आया तो हज़रत यूसुफ राजा ने जेल से निकाल लिया। यह उनके लिये एक रिहाई का साधन बन गया और उसने उनके वित्त मंत्री बना दिया। कुछ ख़ुवाबें ऐसी होती हैं कि उनकी व्याख्या समझ नहीं आती। लेकिन हज़रत यूसुफ को अल्लाह तआला ने सपनों के विषय में विशेष ज्ञान दिया हुआ था इस लिए उन्हें सपने की समझ आ गई। तो मनुष्य को अल्लाह तआला कुछ अच्छी ख़ुवाबें दिखाता है जिनका प्रभाव मनुष्य के मन पर होता है। अगर कोई अच्छी ख़वाब न हो तो मन पर ऐसा प्रभाव है कि माना जाता है कि इसका अच्छा परिणाम नहीं होगा। इसलिए कहते हैं कि कुछ सपनों के अर्थ समझ नहीं आती। इसलिए जब भी कोई ख़वाब देखो, तुम्हारे दिल पर अच्छा या बुरा असर हो, दोनों मामलों में सदका दे दिया करो। अगर शैतानी ख़ुवाबें होती हैं वह ऐसी होती हैं कि जैसे लोग कह देते हैं कि हमें ख़वाब आई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम झूठे हैं। यह अगर ख़वाब आई तो यह शैतानी ख़वाब है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि इस व्यक्ति ने मेरे बाद आना है और मेरे धर्म को फैलाना है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को दुनिया में फिर से स्थापित करना है यह कह दें कि झूठा है, बिल्कुल ग़लत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चुनौती दी कि अल्लाह तआला का समर्थन हमेशा उनके साथ है तो इस प्रकार की ख़ुवाबें शैतानी ख़ुवाबें होती हैं। अत: लोगों को अगर ख़वाब आया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं और एक ख़वाब आया कि वे झूठे हैं तो वह ख़ुद झूठा है वह ख़वाब शैतानी ख़वाब है। सपनों की तफसीर भी भिन्न है। जैसे एक बार हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीसरे बेटे हैं एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ख़ुवाब देखी कि मुहम्मद अहसान नाम का एक व्यक्ति है जिस की कब्र बाज़ार में है। इसे बाज़ार में दफनाया गया है। अब कुछ लोग कहेंगे कि यह अच्छी ख़वाब है, लोग चलते होंगे और उसकी कब्र पर दुआ करते होंगे। लेकिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह ख़वाब बताई तो आपने कहा कि मुहम्मद अहसान नाम का एक व्यक्ति या तो अहमदियत से मुर्तद हो जाएगा या कपटी होगा। बाद में फिर ऐसे हुए कि एक व्यक्ति जो सहाबी भी थे और नाम भी उनका यही था, ख़िलाफत सानिया के समय में जमाअत छोड़ गए। तो यह बात ज़ाहिर हो गई। इस तरह सपनों की लंबे विवरण होते हैं। लेकिन तुम्हें समझ या न आए तुम सदका दे दिया करो। क्योंकि प्रत्येक व्याख्या प्रत्येक को समझ नहीं आ सकती। इसका सरल इलाज यह है कि अच्छी हो या बुरी हो सदका दे दिया करो।

*** एक बच्ची ने सवाल किया कि इस्लाम का विकासवाद के विषय में क्या ख़्याल है?**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया इस्लाम कहता है कि विकास हुआ है। अल्लाह तआला कहता है कि विकास हुआ है। मनुष्य की जो पूर्णता हुई है वह विकास के द्वारा हुई है। लेकिन हम यह नहीं मानते कि डार्विन के विकास का सिद्धांत ठीक थी। न beetle से इंसान बना न बंदर से। कुछ समय हुए नेशनल ज्योग्राफिक ने एक रिसर्च प्रस्तुत कि beetle से विभिन्न selections हुईं जिनसे अन्त में आदमी बना। यह सब व्यर्थ बात हैं। हां इंसान का अपना अलग विकास हुआ। मनुष्य एक अलग नस्ल है। मनुष्य धीरे धीरे बढ़ता गया। पहले इंसान जानवर की तरह था। जंगलों में जानवरों की तरह रहता था। वहाँ शिकार करता था। फिर गुफाओं में आ गया तो लोहे से काम लेना शुरू किया। फिर एग्रीकल्चर का दौर आया। इस तरह धीरे धीरे जमानों में वृद्धि हुई है। अपने आप को देख लो एक पीढ़ी का गैप ही काफी है। तुम देख लो Instagram, वाट्स एप्लिकेशन, iPad, iPhone और अमुक अमुक चीजें आती हैं। तुम्हारी दादी को कल्पना भी नहीं थी। न नानी को पता था। बल्कि कुछ की अम्मा को भी नहीं पता कि यह क्या बात है। इसका मतलब है कि तुम्हारे दिमाग़ की तरक्की हुआ। जिस तरह सोचें बढ़ती गईं, ज़माना मोर्डरन होता गया और ज्ञान बढ़ता गया। इसी तरह तुम्हारे दिमाग़ की तरक्की हुई, तुम्हारी इस रिसर्च या ज्ञान की प्यास पढ़ती गई। यह है मूल विकास। पहले छोटी सोच थी। जंगल का जीवन, फिर गुफा की फिर लोहा, फिर खेती शुरू हुई। छोटे छोटे उपकरण बनाने लग गए। अफ्रीका में जब मैं अस्सी के दशक में था, बहुत सारे छोटे किसान, छोटे जमीनें थीं उनका उपकरण तलवार की तरह था जिस से वे खेती और ज़मीन को नरम करते थे। बस दो उपकरण उनके पास होते थे। एक hoe और दूसरा कटलस जिससे वे खेती करते थे। अब तो आधुनिक खेती हो गई है। ट्रैक्टर आदि आ गए हैं। इसी तरह यूरोप में है। अगर तुम उनके संग्रहालय में जाओ, ये तुम्हें अपने पुराने उपकरण दिखाएंगे। मानव तरक्की ही विकास है। बाकी बंदर से इंसान नहीं बना। इंसान, इंसान ही था। अगर तुम अधिक पढ़ना है तो हज़रत ख़लीफा राबे रहमहुल्लाह की किताब रेवीलेशन रेशनलटी पढ़ लो।

एक बच्ची ने सवाल किया कि क्या हम अल्लाह तआला को ख़वाब में देख सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: अल्लाह तआला क्या है। एक शरीर तो नहीं है। वह तो एक नूर है। हज़रत मूसा ने कहा था कि ख़ुदा मुझे अपना आप दिखा दे। अल्लाह तआला ने कहा, तुम नहीं देख सकते। लेकिन आपने कहा कि दिखा। फिर अल्लाह तआला ने कहा कि इस पहाड़ को देखो। मैं उस पर अपना थोड़ा जलवा डालूँगा अगर तुम ने इसे देख लिया तो तुम मुझे देख सकते

शेष पृष्ठ 12 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 28 February 2019 Issue No. 9

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की बरकतें

हज़रत मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी का वर्णन है कि :-

''जब हज़रत मौलाना हसन अली साहिब भागलपुरी (र) क़ादियान आये तो उन्होंने हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब से पूछा कि आंजनाब को हज़रत मिर्ज़ा साहिब से हुस्ने इरादत का सौभाग्य कैसे प्राप्त हुआ। आपने फ़र्माया मैं इस चौदहवीं सदी के बारे में मुजद्दिदों (सुधारकों) के ज़हूर वाली हदीस के अनुसार किसी मुजद्दिद के पैदा होने का बड़े शौक़ के साथ मुन्तज़िर था। कहीं से किसी की आवाज़ सुनाई दे।उसी दौरान बराहीन-ए-अहमदिया का इश्तिहार निकला और मेरे पास भी पहुँचा। इश्तिहार पढ़ते ही मैं बहुत ख़ुश हुआ कि वादा-ए-तज्दीद के ज़हूर (अर्थात मुजद्दिद के प्रकट) होने की ख़ुशख़बरी पाने का मौक़ा मिला। जब मैं क़ादियान गया तो सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसार दुआ पढ़ी। जब आप पर नज़र पड़ी तो आपकी सच्चाई वाली सूरत देखकर पहचान गया कि ऐसा मुँह सच्चों के बग़ैर नहीं हो सकता। आपको देखने से और आपके सद्व्यवहार से मेरा दिल इतना प्रभावित हुआ कि मुहब्बत से मैं आपका प्रेमी हो गया। फिर एक गुनाह मुझे महसूस हुआ करता था। उसके दूर करने के लिए मैंने हर संभव कोशिश की लेकिन वह दूर न हुआ था। अन्त में हज़रत अक़दस की तवज्जुह और बरकत से स्वयं दूर हो गया हालाँकि मैंने आप से इस गुनाह का वर्णन भी नहीं किया था। आपने चर्चा के तौर पर मौलवी हसन अली साहिब से यह भी फ़र्माया कि मेरे नज़दीक व युज़क्कीहिम् की विशेषता ख़ुदा तआला के नबियों के लिए निशान के तौर पर पाई जाती है। अर्थात यह कि अल्लाह की ओर से आए हुए सुधारकों की संगति से लोगों को पवित्र होने का फ़ायदा प्राप्त होता है और अन्तरात्मा गुनाहों से नफ़रत करने लगती है और यह बात हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब की संगति से मुझे तो इस समय मिल रही है और बारीक से बारीक तक़्वा की राहें खुलती जा रही हैं ।''

आफ़ फ़रमाते हैं कि :-

''एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि क़ादियान के एक अहमदी दोस्त ने बहुत से अहमदी दोस्तों को निमन्त्रण दिया जिनमें हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब और मौलवी हसन अली साहिब भी थे। जब खाने से फ़ुर्सत होकर निवास स्थान की ओर वापिस आ रहे थे तो रास्ते में एक मकान था। उस पर सरकण्डों का छप्पर था। उस छप्पर से कुछ सरकण्डे जो काफी नीचे की ओर झुके हुए थे। उनमें से एक सरकण्डे से मौलवी हसन अली साहिब ने दाँतों को कुरेदने के लिए एक तिनका तोड़ लिया।जब हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने मौलवी हसन अली साहिब को देखा कि आपने दाँत कुरेदने के लिए तिनका तोड़ा है तो आप खड़े हो गये और मौलवी साहिब महोदय को संबोधित करते हुए फ़र्माया। मौलवी साहिब ! हज़रत मिर्ज़ा साहिब की संगति का असर मेरे दिल पर तक़्वा के लिहाज़ से इतना ज़्यादा पड़ा है कि जिस तिनके को आपने तोड़ा है। मेरा दिल उसके लिए कदापि हिम्मत नहीं कर सकता बल्कि ऐसे काम को तक़्वा के ख़िलाफ़ और गुनाह महसूस करता है। इस पर मौलवी हसन अली साहिब अत्यन्त अचंभित होकर कहने लगे कि क्या यह काम भी गुनाह भी गिना जाता है। मैं तो इस को गुनाह नहीं समझता। हज़रत मौलाना ने फ़र्माया, जब यह सरकण्डा दूसरे के मकान की चीज़ है तो उससे मकान मालिक की इजाज़त के बग़ैर तिनका तोड़ना मेरे नज़दीक गुनाह में शामिल है। मौलवी हसन अली साहिब के दिल पर तक्वा के इस बारीक व्यावहारिक नमूने का बहुत बड़ा असर हुआ ।''

हज़रत मौलाना राजेकी साहिब ही का वर्णन है कि :-

''नवाब खान साहिब तहसीलदार जो सच्चे और निश्छल अहमदी थे।जब गुजरात में स्थानान्तरित होकर आये, तो जब दौरे में राजेकी में आते तो मेरे पास कुछ देर अवश्य ठहरते और मुझसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सच्चाई और महानता के बारे में अक्सर बातचीत होती रहती थी।एक दिन इसी तरह की बातचीत का सिलसिला जारी था कि नवाब ख़ाँ साहिब तहसीलदार मरहूम ने मुझसे चर्चा की कि मैंने हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब से एक बार कहा कि मौलाना ! आप को पहले ही बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे।आपको हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से ज़्यादा क्या फ़ायदा मिला ? इस पर हज़रत मौलाना साहिब(र) ने फ़र्माया, नवाब ख़ाँ ! मुझे हज़रत मिर्ज़ा साहिब की बैअत से फ़ायदे तो बहुत से मिले हैं लेकिन एक फ़ायदा उनमें से यह हुआ है कि पहले मुझे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत ख़्वाब के द्वारा हुआ करती थी अब चेतना में भी होती है ।''

हज़रत मौलाना राजेकी साहिब की यह भी रिवायत है कि :-

''एक बार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जिन्दगी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल(र) अपने दवाख़ाना में थे। ख़ाकसार भी वहाँ ही मौजूद था।इतने में संयोग से नाना जान अर्थात हज़रत मीर नासिर नवाब(र) जो हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहो अन्हा के पिता थे, आ गये। दोनों पवित्रात्माओं के मध्य बातचीत शुरू हुई। बातों बातों में हज़रत मौलवी साहिब(र) ने हज़रत मीर साहिब(र) से फ़र्माया, मीर साहिब ! एक बात आपसे पूछना चाहता हूँ। हज़रत मीर साहिब ने कहा, कहिए। आपने फरमाया मीर साहिब ! आपको तो हम जानते ही हैं कि आप भी अहमदियत से पहले अहले हदीस थे और हम भी। लेकिन यह क्या बात हुई कि आपकी लड़की को हज़रत मसीह मौऊद जैसा पति मिल गया। उसके जवाब में हज़रत मीर साहिब ने फरमाया असल बात तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल ही की है।लेकिन जब से मेरी यह लड़की पैदा हुई है। मैंने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें इसके लिए यह दुआ न की हो कि हे अल्लाह ! तेरे निकट जो व्यक्ति सबसे अधिक योग्य और उचित हो उसके साथ उसका विवाह हो जाये। हज़रत मौलवी साहिब ने यह जवाब सुनकर फ़र्माया।बस मैं समझ गया यह किसी समय की दुआ ही है जिसका तीर निशाने पर लगा है ।'' (उद्धरित हयाते नूर)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 11 का शेष

हो। फिर अल्लाह तआला ने क्या किया? उस पर्वत पर ऐसी बिजली पड़ी कि टुकड़े हो गया। हज़रत मूसा बेहोश होकर गिर पड़े। फिर उन्होंने कहा करो मेरी तौबा मैं नहीं देखता। इसी तरह अल्लाह तआला की ज़ाहरी (भौतिक) शक्ल नहीं है। वह नूर है और हर जगह मौजूद है। ऊपर भी नीचे भी है, दाए भी है बाएं भी है। अब कनाडा में रात हो रही है और एशिया में दिन हो रहा है। अल्लाह तआला दोनों देख रहे हैं। नार्थ पूल और साऊथ पोल भी नज़र आ रहा है। अल्लाह तआला का प्रकाश हर तरफ बराबर पड़ रहा है। इस तरह का प्रकाश नहीं है जिस की कुछ रोशनी कम है। कशफ की हालत में अल्लाह तआला की आवाज़ सुन सकते हो। बड़ी शक्तिशाली और रोमांचक एक स्थिति है जिसे तुम सुनते ही कहती हो कि यह अल्लाह तआला है। जिसे तुम सपने में देखो साथ ही कहो कि अल्लाह तआला ने मेरे दिल में बात डाली है। दिल में गड़ जाती है। कुछ रूपक के रूप में कुछ हस्तियों में नज़र आता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं होता कि अल्लाह तआला वैसा है। केवल तुम्हारी शान्ति के लिए होता है। कई बार लोग देख लेते हैं कि अल्लाह तआला अमुक के रूप में बोल रहा है। वह अल्लाह तआला का गुण व्यक्त होता है। इसी तरह हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने इकबाल के उत्तर में एक नज़म लिखी थी जो भारत पाकिस्तान का बड़ा फलासफर और कवि था। उसने कहा कि अल्लाह तआला तू कहाँ है तू नज़र नहीं आता। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सबसे बड़ी पुत्री हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने जवाब लिखा कि मुझे शक्ल मजाज़ में अर्थात् मैं भौतिक रूप से नहीं दिख सकता हूँ लेकिन कैसे? पेड़, आकाश, कुदरतों के सौंदर्य, पहाड़ की घाटियों, नियागराफ़ाल में देखो। हर जगह दिख रहा है।

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad